राजनीति विज्ञान इकाई-1 ई-पुस्तिका

सिटिज़नशिप

- प्राचीन यूनानी राजनीतिक विचार (*पोलिस* या नगर-राज्य) में निहित तथा गणतंत्रीय परंपरा का केंद्रीय विषय, जिसमें नागरिक भागीदारी और सद्गुण पर बल दिया गया।
- **सरलतम रूप:** एक कानूनी और सामाजिक स्थिति जो किसी व्यक्ति को एक राजनीतिक समुदाय, आम तौर पर एक राज्य, के सदस्य के रूप में दर्शाती है, जिसे अधिकारों का एक समूह और, पारस्परिक रूप से, दायित्व प्रदान किए जाते हैं।
- व्यक्ति और राज्य के बीच के रिश्ते को दर्शाता है। यह एक गतिशील बंधन है, जो पारस्परिक अधिकारों (नागरिक को राज्य से क्या मिलना चाहिए) और दायित्वों (नागरिक का राज्य के प्रति क्या दायित्व है) द्वारा परिभाषित होता है।

- **सदस्यता निम्न प्रकार की हो सकती है:**

  - **निष्क्रिय:** नागरिक अधिकारों के प्राप्तकर्ता होते हैं (जैसे, कानूनी संरक्षण, सामाजिक लाभ) और दायित्वों के अधीन होते हैं (जैसे, कानूनों का पालन करना, करों का भुगतान करना) बिना उन्हें आकार दिए।
  - **सक्रिय:** नागरिक नागरिक और राजनीतिक जीवन में भाग लेते हैं, समुदाय के शासन और विकास में योगदान देते हैं (जैसे, मतदान करना, सार्वजनिक बहस में भाग लेना, सामुदायिक सेवा)।

- **ऐतिहासिक टिप्पणी:** नागरिकता की अवधारणा प्राचीन यूनानी विचारों और व्यापक रोमन कानूनी स्थितियों से महत्वपूर्ण रूप से विकसित हुई।
- सामंतवाद के दौरान यह कम हो गया (इसका स्थान अधीनस्थता ने ले लिया), राष्ट्र-राज्य के उदय के साथ शक्तिशाली रूप से पुनर्जीवित हुआ (उदाहरण के लिए, फ्रांसीसी क्रांति ने नागरिक समानता पर जोर दिया), और 20वीं-21वीं शताब्दियों में सामाजिक अधिकारों को शामिल करने के लिए इसका विस्तार किया गया और अब यह वैश्वीकरण, बहुसांस्कृतिक अधिकार और डिजिटल नागरिकता जैसे मुद्दों से जूझ रहा है।

नागरिकता का ऐतिहासिक विकास:

---

1. प्राचीन ग्रीस

- नागरिकता *पोलिस* (शहर-राज्य) सदस्यता से जुड़ी हुई है। [1]
- केवल नागरिक माता-पिता से जन्मे स्वतंत्र वयस्क पुरुष ही नागरिक थे।
- नागरिकता में विधानसभाओं और जूरी में राजनीतिक भागीदारी शामिल थी [12]
- महिलाओं, दासों और विदेशियों (*मेटिक्स*) को बाहर रखा गया। [3]
- उदाहरण: एथेंस प्रत्यक्ष लोकतंत्र का क्लासिक मॉडल है [14]

---

2. प्राचीन रोम

- नागरिकता ग्रीस की तुलना में अधिक समावेशी और कानूनी थी।
- रोमन नागरिकता से रोमन कानून के तहत कानूनी अधिकार और सुरक्षा मिलती है। [5]
- नागरिकता को विजित लोगों तक बढ़ाया जा सकता था (उदाहरण के लिए, 212 ई. काराकाल्ला का आदेश) [16]
- *सिविटास* (नागरिकता) और *पेरेग्रीनी* (गैर-नागरिक) के बीच अंतर ।
- सैन्य सेवा और कराधान सहित अधिकारों और कर्तव्यों पर जोर दिया गया [17]

---

3. मध्यकालीन काल

- रोमन साम्राज्य के पतन के साथ शास्त्रीय नागरिकता का ह्रास हुआ।

- सामंती व्यवस्था ने नागरिकता के स्थान पर राजाओं के प्रति वफादारी पर आधारित अधीनता को स्थापित कर दिया।
- आम लोगों के लिए कोई राजनीतिक भागीदारी या कानूनी समानता नहीं।
- सदस्यता व्यक्तिगत निष्ठा पर आधारित है, कानूनी स्थिति या अधिकारों पर नहीं।
- चर्च और राजतंत्र सत्ता के प्राथमिक स्रोत थे।

---

4. पुनर्जागरण और प्रारंभिक आधुनिक काल

- पुनर्जागरण के दौरान नागरिकता के शास्त्रीय विचारों का पुनरुत्थान।
- नागरिकता अवधारणाओं के साथ नगर-राज्यों और प्रारंभिक राष्ट्र-राज्यों का उदय।
- नागरिकता संपत्ति के स्वामित्व और सामाजिक स्थिति से जुड़ी है। [8]
- व्यापार और वाणिज्य के विस्तार ने नागरिक पहचान को प्रभावित किया।

---

5. ज्ञानोदय और आधुनिक युग

- राष्ट्र-राज्य से जुड़ी कानूनी और राजनीतिक स्थिति के रूप में नागरिकता। [9]
- जॉन लॉक, रूसो और मोंटेस्क्यू जैसे विचारकों ने सामाजिक अनुबंध और लोकप्रिय संप्रभुता पर जोर दिया [10]
- समानता और अधिकारों पर आधारित सार्वभौमिक नागरिकता का उदय।
- फ्रांसीसी और अमेरिकी क्रांतियों ने संविधानों में नागरिकता को संस्थागत रूप दिया [11]
- नागरिकता अधिकारों (नागरिक, राजनीतिक, सामाजिक) की अवधारणा का विस्तार किया गया। [12]

---

6. 19वीं और 20वीं शताब्दी

- नागरिकता राष्ट्रवाद और राष्ट्र निर्माण से जुड़ी है।
- मताधिकार विस्तार (सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार) के माध्यम से सामूहिक नागरिकता का परिचय।
- कल्याणकारी राज्य के विकास से सामाजिक नागरिकता का विस्तार हुआ (टी.एच. मार्शल) [13]
- लोकतांत्रिक समाजों में नागरिकता अधिकारों और जिम्मेदारियों से जुड़ गयी।
- नस्लीय, लैंगिक और वर्गीय बहिष्कार के मुद्दे कायम रहे और उन्हें चुनौती दी गई।

---

7. समकालीन काल

- नागरिकता संबंधी बहस बहुसंस्कृतिवाद, वैश्वीकरण और पारराष्ट्रीयतावाद पर केंद्रित है ।
- दोहरी नागरिकता और सुपरनेशनल नागरिकता (जैसे, यूरोपीय संघ) का उदय।
- चुनौतियों में राज्यविहीनता, प्रवासन और शरणार्थी संकट शामिल हैं।
- नागरिकता को कानूनी स्थिति से परे सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों को शामिल करने के लिए पुनर्परिभाषित किया गया।

राजनीतिक सिद्धांत में नागरिकता: प्रमुख विचारक और विचार

1. नागरिकता के शास्त्रीय आधार

अरस्तू

पुस्तक: राजनीति (चौथी शताब्दी ई.पू.)

मुख्य विचार:

- नागरिकता को शासन करने और शासित होने की क्षमता से परिभाषित किया जाता है।
- पोलिस में सद्गुण, सार्वजनिक भागीदारी और विचार-विमर्श पर जोर।
- एक अच्छा नागरिक हमेशा एक अच्छा इंसान नहीं हो सकता; नागरिकता संदर्भ पर निर्भर करती है।

2. सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकार (प्रारंभिक आधुनिक काल)

थॉमस हॉब्स

पुस्तक: लेविथान (1651)

मुख्य विचार:

- नागरिकता में सुरक्षा के बदले में अपने अधिकारों को संप्रभु को सौंपना शामिल है।
- सुरक्षा और व्यवस्था को स्वतंत्रता से अधिक प्राथमिकता दी जाती है।
- नागरिक एक निरंकुश सत्ता के अधीन प्रजा हैं।

जॉन लोके

पुस्तक: सरकार के दो ग्रंथ (1689)

मुख्य विचार:

- नागरिकता प्राकृतिक अधिकारों (जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति) पर आधारित है।
- सरकारों को प्रतिनिधि होना चाहिए तथा सहमति से वैधता प्राप्त करनी चाहिए।
- सीमित सरकार का विचार प्रस्तुत किया गया।

जीन-जैक्स रूसो

पुस्तक: द सोशल कॉन्ट्रैक्ट (1762)

मुख्य विचार:

- सामूहिक संप्रभुता के रूप में नागरिकता: व्यक्ति "सामान्य इच्छा" के तहत एकजुट होते हैं।
- प्रत्यक्ष लोकतंत्र और नागरिक सद्गुण के समर्थक।
- स्वतन्त्रता स्वयं-लगाए गए कानूनों के पालन में पाई जाती है।

3. ज्ञानोदय और आदर्शवादी विचारक

इम्मैनुएल कांत

पुस्तक: शाश्वत शांति (1795)

मुख्य विचार:

- विश्वव्यापी अधिकारों, स्वायत्तता और गरिमा पर जोर।
- वैश्विक शांति को सुरक्षित करने के लिए राज्यों के संघ की वकालत।
- कानूनी व्यक्तित्व और तर्कसंगत स्वतंत्रता पर आधारित नागरिकता।

जीडब्ल्यूएफ हेगेल

पुस्तक: फिलॉसफी ऑफ राइट (1820)

मुख्य विचार:

- तर्कसंगत राज्य के नैतिक जीवन (सिटलिचकेइट) के भीतर साकार होती है।
- व्यक्ति परिवार, नागरिक समाज और राज्य जैसी संस्थाओं के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त करता है।
- राज्य सार्वभौमिक इच्छा का मूर्त रूप है।

4. सामाजिक नागरिकता और अधिकार-आधारित सिद्धांत

Join our GROUP so that you can get all the study updates on time and first.

DR. PS YADUVANSHI CLASSES

click here

DON'T SCROLL, JOIN FIRST

+91 8559876786 +91 9982735777

DR. PS YADUVANSHI

CANTRE OF EXCELLENCE

COMPLETE STUDY MATERIAL COURESE

- UNITWISE NOTES BOOKLESTS
- ONELINERS BOOKLET
- MODEL TEST PAPERS
- MCQ BANK BOOKLET
- TOPICWISE NOTES BOOKLET
- QUOTATION BOOKLET
- KEY TERMS BOOKLET
- IMP UNITWISE BOOKS /AUTHOR/YEAR BOOKLET
- PREVIOUS YEARS SOLVED PAPERS
- WEEKLY CURRENT UPDATES

Course Prepared BY
DR. PS YADUVANSHI SIR
Double JRF/3 Times NET
(99.88 perncentile in Dec 19 UGC NET)
1500+ selections in NET/JRF/SET/PGT/ASST. PROF

ENGLISH AND HINDI MEDIUM AVAILABLE

FREE DELIVERY
CASH ON DELIVERY
LOW PRICE
TRUSTED

DR. PS YADUVANSHI CLASSES

+91 8559876786 +91 9982735777

टीएच मार्शल

पुस्तक: नागरिकता और सामाजिक वर्ग (1950)

मुख्य विचार:
- नागरिकता तीन चरणों से होकर गुजरती है:
- नागरिक अधिकार (18वीं सदी)
- राजनीतिक अधिकार (19वीं सदी)
- सामाजिक अधिकार (20वीं सदी)
- सामाजिक अधिकार (जैसे, शिक्षा, कल्याण) समान भागीदारी के लिए आवश्यक हैं।

5. बहुलवाद और बहुसंस्कृतिवाद

माइकल वाल्ज़र

पुस्तक: न्याय के क्षेत्र (1983)

मुख्य विचार:
- नागरिकता को सांस्कृतिक और सांप्रदायिक संदर्भ में समझा जाना चाहिए।
- न्याय और सदस्यता अलग-अलग सामाजिक क्षेत्रों (जैसे, बाजार, राजनीति) में भिन्न-भिन्न होती हैं।

विल किमलिका

पुस्तक: बहुसांस्कृतिक नागरिकता (1995)

मुख्य विचार:
- उदार लोकतंत्रों के भीतर अल्पसंख्यकों के लिए समूह-विभेदित अधिकारों का समर्थन करता है।
- नागरिकता में सांस्कृतिक सदस्यता और पहचान की मान्यता को शामिल किया जाना चाहिए।

भीखू पारेख

पुस्तक: बहुसंस्कृतिवाद पर पुनर्विचार (2000)

मुख्य विचार:

- नागरिकता समावेशी और सांस्कृतिक बहुलवाद के प्रति उत्तरदायी होनी चाहिए।
- पश्चिमी उदारवाद राजनीतिक सदस्यता के लिए एकमात्र मानक नहीं हो सकता।

6. आलोचनात्मक और उत्तर-संरचनात्मक विचारक

हन्ना अरेंड्ट

पुस्तकें:

- अधिनायकवाद की उत्पत्ति (1951)
- द ह्यूमन कंडीशन (1958)

मुख्य विचार:

- नागरिकता को "अधिकार पाने का अधिकार" के रूप में परिभाषित किया गया है।
- जन्म , क्रिया और सार्वजनिक स्थान पर जोर दिया गया ।

चान्टल मौफ़े

पुस्तक: द डेमोक्रेटिक पैराडॉक्स (2000)

मुख्य विचार:

- संघर्षपूर्ण बहुलवाद की वकालत: संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता के रूप में राजनीति।
- नागरिकता के लिए निरन्तर लोकतांत्रिक सहभागिता और बहस की आवश्यकता होती है।

एटियेन बलिबार

पुस्तक: हम, यूरोप के लोग? (2004)

मुख्य विचार:

- नागरिकता एक साथ समावेशी और अनन्य होती है।
- यूरोपीय सीमा व्यवस्था और राष्ट्रवाद की आलोचना।

सेयला बेन्हाबीब

पुस्तक: दूसरों के अधिकार (2004)

मुख्य विचार:

- नागरिकता विश्वव्यापी होनी चाहिए और उसमें प्रवासी भी शामिल होने चाहिए।
- लोकतांत्रिक राज्यों को "सीमाओं के विरोधाभास" का सामना करना पड़ता है - कैसे लोकतांत्रिक बने रहें और साथ ही अनन्य भी बने रहें।

7. अतिरिक्त प्रभावशाली विचारक

आइरिस मैरियन यंग

पुस्तक: समावेश और लोकतंत्र (2000)

मुख्य विचार:

- सार्वभौमिक मॉडल की आलोचना ।
- हाशिए पर पड़े समूहों के लिए विभेदित नागरिकता की वकालत करना।

चार्ल्स टेलर

पुस्तक: बहुसंस्कृतिवाद और मान्यता की राजनीति (1992)

मुख्य विचार:

- नागरिकता के लिए पहचान को मौलिक महत्व दिया गया है।
- उदार समाजों को सांस्कृतिक भिन्नता को समायोजित करना चाहिए।

नागरिकता प्राप्त करने के तरीके

तरीका	आधार	सामान्य शब्दावली	संक्षिप्त विवरण

जूस सोली	जन्म स्थान	"मिट्टी का अधिकार"	राज्य के क्षेत्र में जन्म लेने वालों को नागरिकता प्रदान की जाती है।
जूस सैंग्विनिस	रक्त संबंधों	"रक्त का अधिकार"	नागरिक माता-पिता से वंश के माध्यम से प्राप्त नागरिकता।
समीकरण	कानूनी प्रक्रिया	अधिग्रहीत	वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक गैर-नागरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद नागरिकता प्राप्त करता है।
विवाह द्वारा	वैवाहिक स्थिति		कुछ राज्य अपने नागरिकों के विदेशी जीवनसाथियों को नागरिकता प्रदान करते हैं या शीघ्रता से प्रदान करते हैं।
निवेश द्वारा	निवेश	"गोल्डन वीज़ा"	कुछ राज्य महत्वपूर्ण आर्थिक निवेश के बदले नागरिकता प्रदान करते हैं।

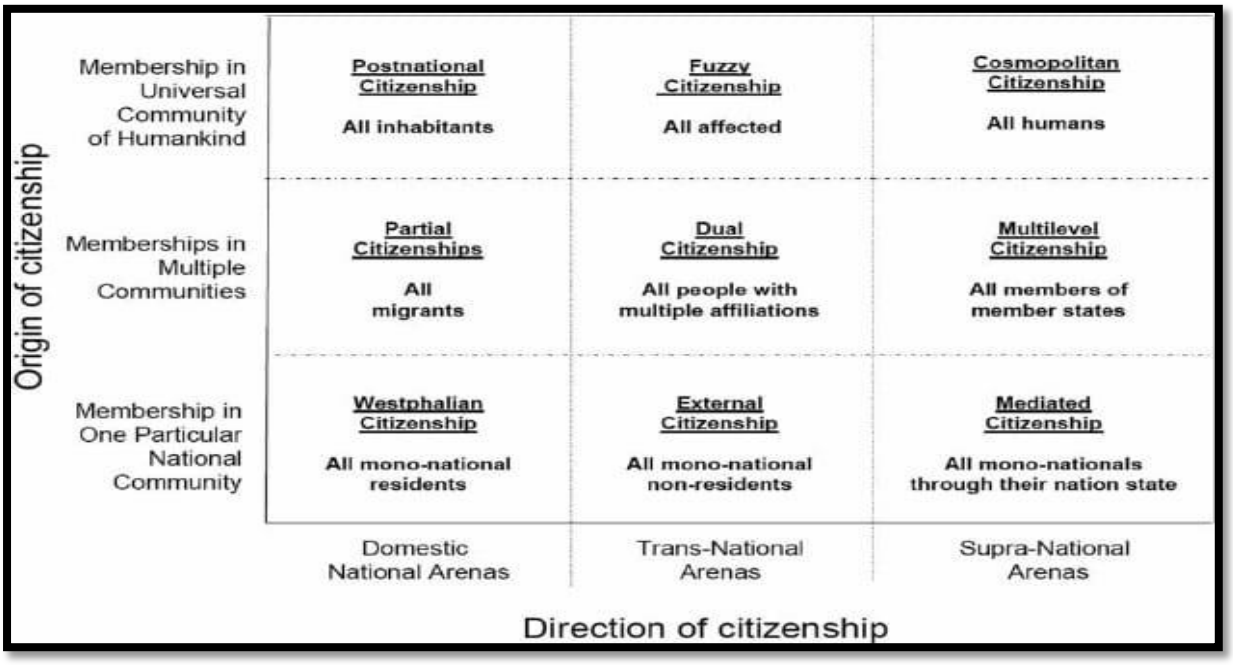

नागरिकता की मौलिक अवधारणाएँ

अवधारणा/पहलू	मुख्य विवरण/परिभाषा	उत्पत्ति/परंपरा	सदस्यता की प्रकृति
नागरिकता (सामान्य)	किसी राजनीतिक समुदाय, मुख्यतः राज्य,	प्राचीन यूनानी राजनीतिक	**निष्क्रिय** (अधिकारों/दायित्वों

	की सदस्यता, जिसमें अधिकारों और दायित्वों का एक समूह शामिल होता है; यह व्यक्ति-राज्य संबंध को परिभाषित करता है।	विचारधारा में निहित; गणतंत्रात्मक परंपरा का केंद्रीय विषय।	का हकदार) और **सक्रिय** (नागरिक/राजनीतिक जीवन में भागीदारी) हो सकता है।
नागरिकता के तत्व	1. **कानूनी स्थिति:** नागरिक, राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों द्वारा परिभाषित। नागरिक एक कानूनी व्यक्ति है, जो कानून के अनुसार कार्य करने और उसके संरक्षण का दावा करने के लिए स्वतंत्र है। 2. **राजनीतिक एजेंट:** नागरिक राजनीतिक संस्थाओं और नागरिक संवाद में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं तथा शासन को प्रभावित करते हैं। 3. **सदस्यता:** एक ऐसे राजनीतिक समुदाय से संबंधित होना जो पहचान, एकजुटता और साझा भाग्य का एक विशिष्ट स्रोत प्रदान करता हो।	अधिकारों के लिए ऐतिहासिक संघर्षों और व्यक्ति-राज्य संबंधों पर दार्शनिक बहसों से व्युत्पन्न।	इसमें औपचारिक कानूनी संबद्धता और वास्तविक भागीदारी एवं पहचान की संभावना दोनों शामिल हैं।

नागरिकता के आयाम (टी.एच. मार्शल - संक्षिप्त एवं सार्थक)

आयाम	शामिल अधिकार एवं महत्व	संबद्ध संस्थाएं
(i) सिविल	व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए आवश्यक अधिकार: व्यक्ति की	न्याय

आयाम	स्वतंत्रता, भाषण, विचार, विश्वास, संपत्ति, अनुबंध, न्याय का अधिकार और कानून के तहत समानता का अधिकार। आर्थिक पहलू: काम करने का अधिकार। *व्यक्तिगत स्वायत्तता और बाजार में भागीदारी के लिए आधार।*	न्यायालय
(ii) राजनीतिक आयाम	राजनीतिक सत्ता के प्रयोग में भाग लेने के अधिकार: वोट देना, नेतृत्व की तलाश करना, समर्थन करना या सत्ता के खिलाफ संघर्ष करना। *लोकतांत्रिक भागीदारी और जवाबदेही को सक्षम बनाता है।*	राजनीतिक संस्थाएं
(iii) सामाजिक आयाम	आर्थिक कल्याण और सुरक्षा के लिए दावे, सामाजिक विरासत में हिस्सा लेना और प्रचलित सामाजिक मानकों के अनुसार सभ्य जीवन जीना। इसमें संस्कृति और जीवन जीने के विशिष्ट तरीके का अधिकार शामिल है। *अन्य अधिकारों के सार्थक प्रयोग के लिए आवश्यक सामाजिक कल्याण का एक बुनियादी स्तर सुनिश्चित करता है।*	कल्याण एवं शैक्षिक प्रणालियाँ

विचारकों द्वारा नागरिकता की प्रमुख परिभाषाएँ:

- **अरस्तू:** वह व्यक्ति जिसके पास किसी भी राज्य के विचार-विमर्श या न्यायिक प्रशासन में भाग लेने की शक्ति है (*पोलिस में सक्रिय भागीदारी पर जोर*) ।
- **हेरोल्ड लास्की: किसी व्यक्ति के "निर्देशित** निर्णय " (सूचित और जिम्मेदार नागरिक भागीदारी) का सार्वजनिक भलाई में योगदान ।
- **जेएम बारबेलेट :** नागरिकता, अपनी प्रकृति में, एक "राजनीतिक बंधन" है जो व्यक्ति-राज्य संबंधों और संसाधनों तक पहुंच के बीच मध्यस्थता करता है।
- **टी.एच. मार्शल:** ('नागरिकता और सामाजिक वर्ग') पूर्ण समुदाय की सदस्यता से जुड़ी स्थिति ; स्थिति धारक उन अधिकारों और कर्तव्यों के संबंध में समान होते हैं जिनके साथ यह स्थिति संपन्न होती है।
- **ब्रायन एस. टर्नर:** मार्शल के आयामों (नागरिक, राजनीतिक, सामाजिक) और "निष्क्रिय" (अधिकार-धारक) और "सक्रिय" (सहभागी) नागरिकता के बीच अंतर पर विस्तार से चर्चा की।
- **कार्ल मार्क्स:** पूंजीवाद के तहत आधुनिक लोकतांत्रिक नागरिकता "बुर्जुआ नागरिकता" है, जो औपचारिक समानता प्रदान करती है जो वास्तविक वर्ग शोषण को छुपाती है।

- **टी.एच. ग्रीन:** नागरिकता के माध्यम से "सकारात्मक स्वतंत्रता" को सक्षम करने पर जोर दिया - जो कि एक सहायक सामाजिक संदर्भ में व्यक्तियों की अपने व्यक्तित्व और क्षमता को विकसित करने की क्षमता है।

1. अरस्तू

- **परिभाषा:** "नागरिक वह व्यक्ति है जिसके पास किसी राज्य के विचार-विमर्शात्मक या न्यायिक प्रशासन में भाग लेने की शक्ति है।"
- **स्रोत:** *राजनीति*
- **वर्ष:** चौथी शताब्दी ई.पू.

2. टीएच मार्शल

- **परिभाषा:** "नागरिकता एक दर्जा है जो उन लोगों को प्रदान किया जाता है जो किसी समुदाय के पूर्ण सदस्य हैं। वे सभी लोग जो इस दर्जा को धारण करते हैं, उन अधिकारों और कर्तव्यों के संबंध में समान हैं जिनके साथ यह दर्जा प्रदान किया गया है।"
- **स्रोत:** *नागरिकता और सामाजिक वर्ग*
- **वर्ष:** 1950

3. जीन-जैक्स रूसो

- **परिभाषा:** "हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व और अपनी समस्त शक्ति को सामान्य इच्छा के सर्वोच्च निर्देशन के अधीन रखता है, और अपनी सामूहिक क्षमता में, हम प्रत्येक सदस्य को समग्रता के अविभाज्य भाग के रूप में ग्रहण करते हैं।"
- **स्रोत:** *सामाजिक अनुबंध*
- **वर्ष:** 1762

4. इमैनुअल कांट

- **परिभाषा:** "नागरिक किसी राज्य का कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त सदस्य होता है, जिसके पास वोट देने, संपत्ति रखने और कानून के तहत स्वायत्त होने का अधिकार होता है।"
- **स्रोत:** *नैतिकता का तत्वमीमांसा*
- **वर्ष:** 1797

5. हन्ना अरेंड्ट

- **परिभाषा:** "नागरिकता अधिकार पाने का अधिकार है।"

- **स्रोत:** *अधिनायकवाद की उत्पत्ति*
- **वर्ष:** 1951

6. विल किमलिका

- **परिभाषा:** "नागरिकता में समूह-विभेदित अधिकार शामिल होने चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अल्पसंख्यक अपनी पहचान बनाए रख सकें और समान रूप से भाग ले सकें।"
- **स्रोत:** *बहुसांस्कृतिक नागरिकता*
- **वर्ष:** 1995

7. सेयला बेन्हाबीब

- **परिभाषा:** "नागरिकता केवल एक कानूनी स्थिति नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक सदस्यता का एक रूप है जिसमें प्रवासियों और बाहरी लोगों को शामिल किया जाना चाहिए।"
- **स्रोत:** *दूसरों के अधिकार*
- **वर्ष:** 2004

8. माइकल वाल्ज़र

- **परिभाषा:** "किसी राजनीतिक समुदाय की सदस्यता नागरिकता का मूल अर्थ है, और न्याय को उस समुदाय के भीतर साझा अर्थों के संदर्भ में समझा जाना चाहिए।"
- **स्रोत:** *न्याय के क्षेत्र*
- **वर्ष:** 1983

9. आइरिस मैरियन यंग

- **परिभाषा:** "नागरिकता को उत्पीड़न और बहिष्कार के समूह-आधारित अनुभवों को प्रतिबिंबित करने के लिए विभेदित किया जाना चाहिए।"
- **स्रोत:** *समावेशन और लोकतंत्र*
- **वर्ष:** 2000

10. जीडब्ल्यूएफ हेगेल

- **परिभाषा:** "सच्ची स्वतंत्रता केवल परिवार, नागरिक समाज और राज्य में भागीदारी के माध्यम से नैतिक जीवन में ही प्राप्त होती है - नागरिकता की प्राप्ति।"
- **स्रोत:** *अधिकार का दर्शन*
- **वर्ष:** 1820

11. चैंटल मौफ़े

- **परिभाषा:** "नागरिकता कोई आम सहमति नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर पहचान और हितों की निरंतर प्रतिस्पर्धा है।"
- **स्रोत:** *लोकतांत्रिक विरोधाभास*
- **वर्ष:** 2000

12. चार्ल्स टेलर

- **परिभाषा:** "नागरिकता में बहुसांस्कृतिक समाज में पहचान की पारस्परिक मान्यता शामिल है, जहां उदार लोकतंत्र के भीतर सांस्कृतिक अंतर को समायोजित किया जाता है।"
- **स्रोत:** *बहुसंस्कृतिवाद और मान्यता की राजनीति*
- **वर्ष:** 1992

13. भीखू पारेख

- **परिभाषा:** "नागरिकता सांस्कृतिक रूप से तटस्थ नहीं है; समकालीन समाजों के बहुसांस्कृतिक चरित्र के प्रकाश में इस पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए।"
- **स्रोत:** *बहुसंस्कृतिवाद पर पुनर्विचार*
- **वर्ष:** 2000

14. कैरोल पैटेमैन

- **परिभाषा:** "उदार लोकतंत्रों में नागरिकता निहित रूप से पुरुष प्रधान रही है; वास्तविक लोकतांत्रिक नागरिकता के लिए महिलाओं को पूर्ण भागीदार के रूप में शामिल करना आवश्यक है।"
- **स्रोत:** *यौन अनुबंध*
- **वर्ष:** 1988

15. जुर्गेन हैबरमास

- **परिभाषा:** "नागरिकता सार्वजनिक क्षेत्र में संचारात्मक कार्रवाई के माध्यम से गठित होती है, जहां व्यक्ति तर्कसंगत-आलोचनात्मक बहस में भाग लेते हैं।"
- **स्रोत:** *तथ्यों और मानदंडों के बीच*
- **वर्ष:** 1996

16. डेविड मिलर

- **परिभाषा:** "नागरिकता सदस्यता का एक रूप है जिसमें न केवल अधिकार बल्कि जिम्मेदारियां भी शामिल होती हैं, जो राष्ट्रीय पहचान और लोकतांत्रिक भागीदारी द्वारा आकार लेती हैं।"
- **स्रोत:** *नागरिकता और राष्ट्रीय पहचान*
- **वर्ष:** 2000

17. ब्रायन टर्नर

- **परिभाषा:** "नागरिकता अधिकारों और दायित्वों का एक समूह है, जो कल्याणकारी राज्य से जुड़ा हुआ है और अर्थव्यवस्था और प्रवासन में वैश्विक परिवर्तनों द्वारा आकार लेता है।"
- **स्रोत:** *नागरिकता और सामाजिक सिद्धांत*
- **वर्ष:** 1993

भारत में नागरिकता पर प्रमुख विचारक

1. बी.आर. अंबेडकर

- **प्रमुख कार्य:** *जाति का विनाश* (1936), संविधान सभा की बहस
- **मूल विचार:** समानता और सामाजिक न्याय की वकालत की गई; जातिगत भेदभाव को दूर करने और समावेशन को बढ़ावा देने के लिए संवैधानिक नागरिकता पर जोर दिया गया।

2. रजनी कोठारी

- **प्रमुख कार्य:** *भारत में राजनीति* (1970), *भारत में लोकतंत्र*
- **मूल विचार:** बहुलवाद और लोकतंत्र की चुनौतियों की जांच; बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी समाज में नागरिकता की जटिलता।

3. पार्थ चटर्जी

- **प्रमुख कार्य:** *राष्ट्र और उसके टुकड़े* (1993), *शासितों की राजनीति* (2004)
- **मूल विचार:** औपनिवेशिक विरासत द्वारा आकारित नागरिकता; राज्य-नागरिकता और राजनीतिक समाज के बीच अंतर; हाशिए पर पड़े समूह नागरिकता के लिए अलग तरीके से बातचीत करते हैं।

4. गोपाल गुरु

- **प्रमुख कार्य:** *अपमान: दावे और संदर्भ* (2012)
- **मूल विचार:** जाति और नागरिकता की पड़ताल; तर्क है कि जाति समान नागरिकता को कमजोर करती है; सामाजिक सम्मान को मान्यता देने का आह्वान।

5. चंद्रभान प्रसाद

- **प्रमुख कार्य:** *दलित राजधानी: किसान, व्यापारी, योद्धा*
- **मुख्य विचार:** नागरिकता हाशिए पर पड़े समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण से जुड़ी है; सामाजिक और आर्थिक समावेशन पर जोर दिया गया है।

6. निवेदिता मेनन

- **प्रमुख कार्य:** *नारीवादी की तरह देखना* (2012)
- **मूल विचार:** नागरिकता और लिंग; पितृसत्तात्मक संरचनाओं की आलोचना; एजेंसी और अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करते हुए नारीवादी नागरिकता को बढ़ावा देना।

7. राजीव भार्गव

- **प्रमुख कार्य:** *राजनीतिक सिद्धांत: एक परिचय* (2008), *भारत के धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र का वादा* (2010)
- **मूल विचार:** धर्मनिरपेक्ष, बहुसांस्कृतिक लोकतंत्र में समावेश के रूप में नागरिकता; समूह अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं के बीच संतुलन स्थापित करते हुए गहन लोकतंत्र की वकालत करना।

8. उपेन्द्र बख्शी

- **प्रमुख कार्य:** *मानव अधिकारों का भविष्य* (2002)
- **मुख्य विचार:** नागरिकता में मानवाधिकार और सामाजिक न्याय पर जोर; नागरिकता अधिकारों के विस्तार में न्यायपालिका की भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

9. अनुपमा राव

- **प्रमुख कार्य:** *जाति का प्रश्न* (2009)
- **मूल विचार:** नागरिकता जातिगत पदानुक्रम से गहराई से प्रभावित होती है; आधुनिक नागरिकता में जाति की निरंतरता की जांच करता है।

10. सुजीत कुमार

- **प्रमुख कार्य:** *भारतीय नागरिकता अधिनियम और उससे आगे*
- **मुख्य विचार:** भारत में नागरिकता के कानूनी ढांचे पर ध्यान केंद्रित; एनआरसी, सीएए और नागरिकता कानूनों में बदलाव पर बहस।

नागरिकता पर सैद्धांतिक दृष्टिकोण

- **उदारवादी सिद्धांत (जैसे, टी.एच. मार्शल):** नागरिकता को एक ऐसी स्थिति के रूप में ध्यान में रखता है जो व्यक्तिगत अधिकार प्रदान करती है, नागरिक से राजनीतिक और फिर सामाजिक अधिकारों में विकसित होती है। इसका उद्देश्य सभी सदस्यों के लिए समान अधिकार और कर्तव्य सुनिश्चित करना है, व्यक्तिगत स्वायत्तता सुनिश्चित करना और आधुनिक उदारवाद में सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करना है।
- **स्वतंत्रतावादी सिद्धांत (उदाहरण के लिए, रॉबर्ट नोज़िक):** नागरिकता और राज्य के दायित्वों को स्वतंत्र चुनाव और अनुबंध से उत्पन्न होने वाला मानते हैं। न्यूनतम "रात्रि-चौकीदार राज्य" की वकालत करते हैं जो मुख्य रूप से संपत्ति के अधिकारों की रक्षा करता है; नागरिक सुरक्षात्मक सेवाओं के ग्राहक की तरह होते हैं।
- **सामुदायिक सिद्धांत (रिपब्लिकन परंपरा - अरेंड्ट, वाल्ज़र , बार्बर):** व्यक्ति और राजनीतिक समुदाय के बीच मजबूत बंधन पर जोर देता है। नागरिकता एक सक्रिय अभ्यास है जिसमें सार्वजनिक जीवन में भागीदारी और नागरिक गुणों को बढ़ावा देने के लिए सामुदायिक मूल्यों के साथ पहचान शामिल है।
- **मार्क्सवादी सिद्धांत (गिडेंस की मार्शल की आलोचना के साथ):** तर्क देता है कि पूंजीवादी समाजों में नागरिकता के अधिकार अक्सर वर्ग संघर्ष और संघर्ष का परिणाम होते हैं, न कि केवल शांतिपूर्ण विकास का। ये अधिकार औपचारिक हो सकते हैं, जो गहरी वर्ग असमानताओं को छिपाते हैं, लेकिन प्रतिरोध को संगठित करने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।
- **बहुलवादी सिद्धांत (जैसे, डेविड हेल्ड):** नागरिकता को एक जटिल, बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में देखता है जिसमें विविध समूह और हित शामिल होते हैं। व्यक्ति और समुदाय के बीच पारस्परिक संबंध पर जोर देता है और विभिन्न सामाजिक आंदोलनों के संदर्भ में सभी प्रकार के भेदभाव (लिंग, जाति, आदि) को संबोधित करने का आह्वान करता है।

नागरिकता पर जानकारी: प्रमुख लेख और तथ्य (भारत):

नागरिकता पर महत्वपूर्ण संवैधानिक अनुच्छेद

1. **अनुच्छेद 5**
- संविधान के प्रारंभ (1950) पर नागरिकता को परिभाषित किया गया।
- भारत में निवास करने वाले उन व्यक्तियों को नागरिकता प्रदान करता है जिनका जन्म भारत में हुआ है या जिनके पूर्वज भारत में जन्मे थे।

2. **अनुच्छेद 6**
- यह विधेयक पाकिस्तान से भारत आये व्यक्तियों के नागरिकता अधिकारों से संबंधित है।

3. **अनुच्छेद 7**
- इसमें पाकिस्तान चले गए और भारत वापस आ गए लोगों के नागरिकता के अधिकार शामिल हैं।

4. **अनुच्छेद 8**
- भारत के बाहर रहने वाले भारतीय मूल के व्यक्तियों को नागरिकता का अधिकार प्रदान करता है।

5. **अनुच्छेद 9**
- यह विधेयक उन व्यक्तियों की नागरिकता पर प्रतिबंध लगाता है जो स्वेच्छा से किसी अन्य देश की नागरिकता प्राप्त करते हैं।

6. **अनुच्छेद 10**
- यह उन व्यक्तियों की नागरिकता जारी रखने की गारंटी देता है जो संविधान के प्रारंभ के समय नागरिक थे।

7. **अनुच्छेद 11**
- यह विधेयक संसद को नागरिकता कानूनों को विनियमित करने की शक्ति देता है।

भारत में नागरिकता के बारे में मुख्य तथ्य

- नागरिकता, नागरिकता अधिनियम, 1955 और उसके संशोधनों द्वारा शासित होती है।
- भारत में *जस सैंग्विनिस* (रक्त से अधिकार) और *जस सोली* (जन्म से अधिकार) सिद्धांतों का पालन कुछ शर्तों के साथ किया जाता है।
- प्राकृतिककरण प्रक्रिया विदेशियों को भारतीय नागरिक बनने की अनुमति देती है।
- भारत में दोहरी नागरिकता की अनुमति नहीं है।
- नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए), 2019 विशिष्ट पड़ोसी देशों से सताए गए अल्पसंख्यकों को त्वरित नागरिकता प्रदान करता है।
- एनआरसी (राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर) कानूनी नागरिकों की पहचान करने के लिए एक विवादास्पद प्रक्रिया है, विशेष रूप से असम में।
- 1.2 बिलियन से अधिक लोग भारतीय नागरिक हैं (नवीनतम जनगणना अनुमानों के अनुसार)।
- नागरिकता संविधान के अनुसार मौलिक अधिकार (कुछ अपवादों को छोड़कर) और कर्तव्य प्रदान करती है।

उदारतावाद

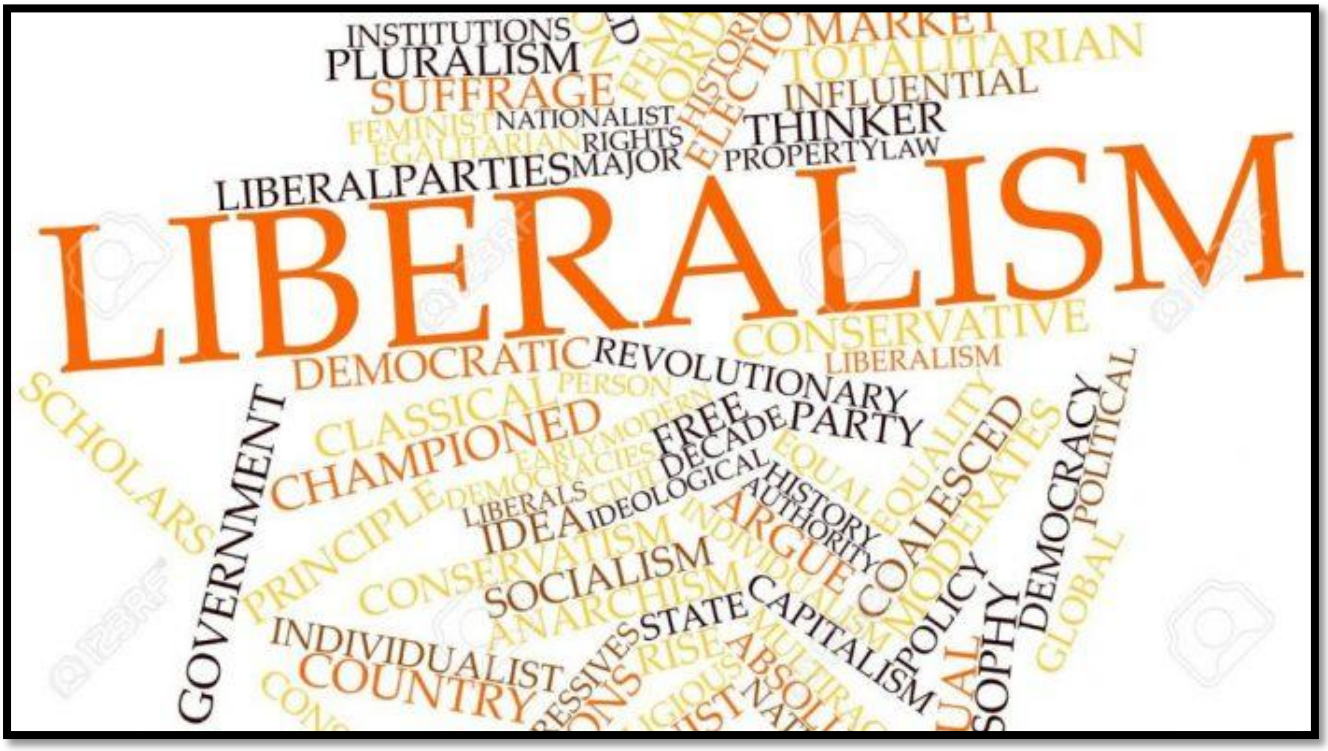

उदारवाद की समयरेखा

17वीं शताब्दी

- 1620 — मेफ्लावर कॉम्पैक्ट: अमेरिका में प्रारंभिक स्वशासन, सहमति के उदार विचारों को प्रभावित करना।
- 1628 — इंग्लैंड में अधिकार याचिका, शाही अधिकार पर सीमाओं का दावा।
- 1689 — अंग्रेजी अधिकार विधेयक: संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना; उदार संवैधानिकता की नींव रखी गयी।

17वीं सदी के अंत से 18वीं सदी के प्रारंभ तक

- जॉन लोके (1632-1704) ने सरकार पर दो ग्रंथ (1689) प्रकाशित किए:

- प्राकृतिक अधिकार (जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति), सामाजिक अनुबंध, सहमति से सरकार, विद्रोह के अधिकार की वकालत करता है।
- बारूक स्पिनोज़ा ने विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के विचारों में योगदान दिया।

18वीं शताब्दी (ज्ञानोदय)

- मोंटेस्क्यू (1689-1755) ने द स्पिरिट ऑफ लॉज़ (1748) लिखा:
- शक्तियों के पृथक्करण तथा नियंत्रण एवं संतुलन की वकालत करता है।
- वॉल्टेयर (1694-1778) नागरिक स्वतंत्रता, धार्मिक सहिष्णुता और मुक्त भाषण के समर्थक थे।
- जीन-जैक्स रूसो (1712-1778) ने द सोशल कॉन्ट्रैक्ट (1762) प्रकाशित किया:
- लोकप्रिय संप्रभुता और सामान्य इच्छा की अवधारणा को प्रस्तुत किया, उदार लोकतंत्र को प्रभावित किया।

18वीं सदी का अंत

- अमेरिकी क्रांति (1776): स्वतंत्रता की घोषणा में सहमति से अधिकारों और सरकार की बात कही गई।
- फ्रांसीसी क्रांति (1789): मानव और नागरिक के अधिकारों की घोषणा स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व को बढ़ावा देती है।

19 वीं सदी

- जॉन स्टुअर्ट मिल (1806-1873) ने ऑन लिबर्टी (1859) प्रकाशित की:
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता, हानि सिद्धांत और उपयोगितावाद पर विचार विकसित करता है।
- टी.एच. ग्रीन (1836-1882) और अन्य नव उदारवादियों ने उदारवाद का विस्तार करते हुए इसमें सामाजिक न्याय और कल्याण को भी शामिल किया।
- ब्रिटेन और यूरोप में मताधिकार और संसदीय लोकतंत्र का विस्तार।

20 वीं सदी के प्रारंभ में

- जॉन डेवी (1859-1952) ने शिक्षा और सामाजिक सुधार पर जोर देते हुए लोकतांत्रिक उदारवाद को बढ़ावा दिया।
- सामाजिक असमानताओं को संबोधित करते हुए कल्याणकारी उदारवाद का उदय।

20वीं सदी के मध्य से अंत तक

- जॉन रॉल्स (1921-2002) ने ए थ्योरी ऑफ जस्टिस (1971) प्रकाशित की:
- निष्पक्षता, अज्ञानता का पर्दा, और समान बुनियादी अधिकारों के रूप में न्याय के सिद्धांतों के साथ उदारवाद को पुनर्जीवित करता है।
- रॉबर्ट नोज़िक (1938-2002) ने एनार्की, स्टेट, एंड यूटोपिया (1974) में स्वतंत्रतावादी आलोचना के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व भर में उदार लोकतंत्र का विकास।

21वीं सदी

उदारवाद वैश्वीकरण, बहुसंस्कृतिवाद, मानवाधिकार और पर्यावरणीय मुद्दों की चुनौतियों के अनुकूल ढलता है।
पहचान की राजनीति, सामाजिक न्याय और विचारशील लोकतंत्र पर बहस जारी है।
डिजिटल युग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और गोपनीयता के बारे में नए प्रश्न उठाता है।

- **मूल परिभाषा:** एक राजनीतिक और नैतिक दर्शन जहां व्यक्तिगत स्वतंत्रता, स्वायत्तता और अधिकारों की रक्षा और वृद्धि करना राजनीति की केंद्रीय समस्या और उद्देश्य है।
- **मौलिक विश्वास:** सरकार व्यक्तियों को दूसरों द्वारा होने वाले नुकसान से बचाने के लिए आवश्यक है, लेकिन इसमें स्वाभाविक रूप से ऐसी शक्ति भी होती है जो स्वतंत्रता को खतरे में डाल सकती है (पेन: "आवश्यक बुराई")।
- **उदारवादियों के लिए केंद्रीय समस्या:** एक ऐसी प्रणाली तैयार करना जो सरकार को स्वतंत्रता की रक्षा करने और सार्वजनिक वस्तुएं प्रदान करने के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान करे, लेकिन

साथ ही संवैधानिकता, कानून के शासन और दुरुपयोग को रोकने के लिए जांच और संतुलन के माध्यम से उस शक्ति को सीमित भी करे।

- **सकारात्मक बनाम नकारात्मक स्वतंत्रता भेद:**
  - **नवशास्त्रीय उदारवादी / स्वतंत्रतावादी (नकारात्मक स्वतंत्रता): बाहरी दबाव** *से* मुक्ति पर जोर देते हैं , खासकर राज्य से। सरकार की भूमिका व्यक्तियों को हस्तक्षेप से बचाना है, न कि सक्रिय रूप से उनकी भलाई को बढ़ावा देना।
  - **आधुनिक उदारवाद / सामाजिक उदारवाद (सकारात्मक स्वतंत्रता - 19वीं सदी के उत्तरार्ध से):** विश्वास करें कि सच्ची स्वतंत्रता के लिए न केवल संयम की अनुपस्थिति की आवश्यकता होती है, बल्कि कार्य करने की क्षमता और अवसर की भी आवश्यकता होती है। गरीबी, बीमारी, भेदभाव और अज्ञानता जैसी बाधाओं को दूर करने में राज्य की भूमिका होती है जो व्यक्तियों को उनकी क्षमता का एहसास करने से रोकती हैं।
- **शब्दावली पर टिप्पणी:** संयुक्त राज्य अमेरिका में, "उदारवाद" को आम तौर पर न्यू डील कल्याणकारी राज्य परंपरा से जोड़ा जाता है। यूरोप में, "उदारवाद" अक्सर सीमित सरकार और अहस्तक्षेप अर्थव्यवस्था के शास्त्रीय विचारों को संदर्भित करता है।

उदारवाद के प्रमुख आधुनिक विचारक:

---

1. जॉन रॉल्स

- **महत्वपूर्ण काम:** *न्याय का सिद्धांत* (1971)
- **मूल विचार:** निष्पक्षता के रूप में न्याय; मूल स्थिति और अज्ञानता का पर्दा; समान बुनियादी स्वतंत्रताएं और अंतर सिद्धांत।

---

2. रॉबर्ट नोज़िक

- **महत्वपूर्ण काम:** *अराजकता, राज्य और स्वप्नलोक* (1974)
- **मूल विचार:** रॉल्स की स्वतंत्रतावादी आलोचना; न्यूनतम राज्य; संपत्ति अधिकार और पात्रता सिद्धांत।

---

3. इसायाह बर्लिन

- **प्रमुख कार्य:** *स्वतंत्रता की दो अवधारणाएँ* (1958)

- **मूल विचार:** नकारात्मक स्वतंत्रता (हस्तक्षेप से मुक्ति) और सकारात्मक स्वतंत्रता (आत्म-नियंत्रण) में अंतर करना।

---

4. चार्ल्स टेलर

- **महत्वपूर्ण काम:** *स्वयं के स्रोत* (1989)
- **मूल विचार: उदारवाद के भीतर** समुदायवाद के महत्व पर बल देता है ; परमाणुवादी व्यक्तिवाद की आलोचना करता है।

---

5. माइकल सैंडेल

- **महत्वपूर्ण काम:** *उदारवाद और न्याय की सीमाएं* (1982)
- **मूल विचार:** उदारवाद की सामुदायिक आलोचना; सामुदायिक मूल्यों और नैतिक तर्क पर जोर।

---

6. विल किमलिका

- **महत्वपूर्ण काम:** *समकालीन राजनीतिक दर्शन* (2002), *बहुसांस्कृतिक नागरिकता* (1995)
- **मूल विचार:** बहुसांस्कृतिक उदारवाद के पक्षधर; उदारवादी ढांचे के भीतर अल्पसंख्यक अधिकार।

---

7. जॉन स्टुअर्ट मिल (शास्त्रीय और आधुनिक उदारवाद को जोड़ना)

- **महत्वपूर्ण काम:** *स्वतंत्रता पर* (1859)
- **मूल विचार:** व्यक्तिगत स्वतंत्रता और हानि सिद्धांत; मुक्त भाषण; उपयोगितावादी नैतिकता।

---

8. अमर्त्य सेन

- **महत्वपूर्ण काम:** *विकास के रूप में स्वतंत्रता* (1999)
- **मूल विचार:** विकास और स्वतंत्रता एक दूसरे से जुड़े हुए हैं; न्याय और मानव कल्याण के लिए क्षमता दृष्टिकोण।

---

9. मार्था नुसबाम

- **महत्वपूर्ण काम:** *क्षमताएँ बनाना* (2011)
- **मूल विचार:** क्षमता दृष्टिकोण का विस्तार; व्यक्तिगत क्षमताओं और गरिमा पर केन्द्रित न्याय के लिए तर्क।

10. जीए कोहेन

- **महत्वपूर्ण काम:** *आत्म-स्वामित्व, स्वतंत्रता और समानता* (1995)
- **मूल विचार:** समतावाद की खोज और स्वतंत्रतावादी स्व-स्वामित्व की आलोचना।

तालिका: उदारवाद के प्रमुख सिद्धांत

सिद्धांत	विवरण
व्यक्तिवाद	व्यक्ति नैतिक और राजनीतिक सरोकार की प्राथमिक इकाई है। समाज व्यक्तियों का समूह है; व्यक्तिगत अधिकार सर्वोपरि हैं।
चेतना	मनुष्य में तर्क शक्ति है और वह ऐसे निर्णय लेने में सक्षम है जो उसके अपने हितों की पूर्ति करते हों तथा सामाजिक प्रगति में योगदान देते हों।
प्राकृतिक अधिकार	व्यक्तियों के पास अंतर्निहित, अविभाज्य अधिकार होते हैं (पारंपरिक रूप से जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति - लॉक) जो सरकार से पहले मौजूद होते हैं और उनकी रक्षा की जानी चाहिए।
सहमति और सामाजिक अनुबंध	वैध सरकार अपना अधिकार शासितों की सहमति से प्राप्त करती है, जिसे अक्सर सामाजिक अनुबंध के माध्यम से संकल्पित किया जाता है।
सीमित सरकार और संविधानवाद	सरकार की शक्ति को संविधान, कानून के शासन, शक्तियों के पृथक्करण तथा अत्याचार को रोकने के लिए जांच और संतुलन द्वारा प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।
सहनशीलता	विविध विश्वासों, प्रथाओं और जीवन-शैली को स्वीकार करने और उनका सम्मान करने की इच्छा, बशर्ते कि वे दूसरों को नुकसान न पहुँचाएँ। शांति के लिए महत्वपूर्ण।
समानता	सभी व्यक्तियों का नैतिक मूल्य समान है। इसका मतलब है कानून के समक्ष समानता, समान अधिकार और आधुनिक उदारवादियों के लिए अवसर की समानता।
आज़ादी	सर्वोच्च व्यक्तिगत मूल्य। इसमें अनुचित बाहरी दबाव से मुक्ति (नकारात्मक स्वतंत्रता) और कार्य करने और क्षमता को साकार

	करने की क्षमता/अवसर (सकारात्मक स्वतंत्रता) शामिल है।

उदारवाद और नवउदारवाद , तालिका और प्रमुख तथ्य सहित:

उदारवाद और नवउदारवाद के बीच अंतर

पहलू	उदारतावाद	neoliberalism
परिभाषा	एक राजनीतिक दर्शन जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, कानून का शासन और सामाजिक न्याय पर जोर देता है।	एक आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण जो मुक्त बाजार, विनियमन, निजीकरण और न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप पर जोर देता है।
ऐतिहासिक उत्पत्ति	इसकी उत्पत्ति 17वीं-19वीं शताब्दी में ज्ञानोदय के दौरान हुई।	20वीं सदी के अंत में (1970-80 के दशक में) कीन्सियन कल्याण अर्थशास्त्र की प्रतिक्रिया के रूप में उभरा।
केंद्र	व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सामाजिक न्याय और अधिकारों के सरकारी संरक्षण के साथ संतुलित करता है।	आर्थिक स्वतंत्रता, बाजार दक्षता और अर्थव्यवस्था में राज्य की भूमिका को कम करने को प्राथमिकता दी गई है।
राज्य की भूमिका	अधिकारों की रक्षा, कल्याण प्रदान करने, अर्थव्यवस्था को विनियमित करने में राज्य की सक्रिय भूमिका।	न्यूनतम राज्य भूमिका मुक्त बाजार के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाने पर केंद्रित है।
आर्थिक नीति	सामाजिक सुरक्षा जाल और कल्याण कार्यक्रमों के साथ विनियमित पूंजीवाद का समर्थन करता है।	विनियमन, निजीकरण, मुक्त व्यापार और मितव्ययिता नीतियों का समर्थन करता है।
सामाजिक न्याय	समानता, पुनर्वितरण और सामाजिक कल्याण पर जोर दिया गया।	अक्सर बाजार-आधारित विकास पर ध्यान केंद्रित करके असमानता बढ़ाने के लिए इसकी आलोचना की जाती है।
दार्शनिक आधार	सामाजिक अनुबंध, व्यक्तिगत अधिकार, निष्पक्षता के रूप में न्याय।	बाजार कट्टरवाद, व्यक्तिगत जिम्मेदारी, आर्थिक उदारीकरण।
प्रमुख	जॉन लोके, जॉन स्टुअर्ट मिल, जॉन	फ्रेडरिक हायेक, मिल्टन फ्रीडमैन, मार्गरेट

विचारक	रॉल्स, टीएच ग्रीन।	थैचर, रोनाल्ड रीगन।
वैश्विक प्रभाव	विश्व भर में आधुनिक लोकतांत्रिक राज्यों और कल्याणकारी प्रणालियों की नींव।	आईएमएफ, विश्व बैंक की नीतियों को प्रभावित किया; विकासशील देशों में संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों को प्रभावित किया।
आलोचना	कभी-कभी इसे बहुत आदर्शवादी या राज्य-भारी के रूप में देखा जाता है।	सामाजिक असमानता, सार्वजनिक सेवाओं को कमजोर करने और कॉर्पोरेट प्रभुत्व के लिए आलोचना की गई।

महत्वपूर्ण तथ्यों

- उदारवाद सामाजिक अनुबंध और प्राकृतिक अधिकारों (जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति) की सुरक्षा पर जोर देता है।
- 1970 के दशक की मुद्रास्फीति के दौरान नवउदारवाद का उदय हुआ, जिसने कीन्सियन आर्थिक नीतियों को अस्वीकार कर दिया।
- मार्गरेट थैचर (यू.के.) और रोनाल्ड रीगन (यू.एस.ए.) प्रमुख राजनीतिक नेता थे जिन्होंने नवउदारवादी नीतियों को लागू किया [1]
- नवउदारवाद की नीतियों में शामिल हैं: करों में कटौती, उद्योगों का विनियमन, कल्याण पर सरकारी खर्च में कटौती [2]
- 1980 और 1990 के दशकों के दौरान जिन देशों ने नवउदारवादी सुधारों को अपनाया उनमें ब्रिटेन, अमेरिका, चिली और कई विकासशील देश शामिल हैं।
- आलोचक वित्तीय बाजारों के विनियमन के कारण 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के लिए नवउदारवाद को दोषी मानते हैं।
- उदारवाद सार्वभौमिक अधिकारों और स्वास्थ्य देखभाल एवं शिक्षा जैसे सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों का समर्थन करता है।
- नवउदारवाद सार्वजनिक सेवाओं के निजीकरण पर जोर देता है तथा वैश्वीकरण और मुक्त व्यापार को प्रोत्साहित करता है।
- 1980 और 1990 के दशकों के दौरान विश्व बैंक और आईएमएफ के संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों ने कई विकासशील देशों पर नवउदारवादी सुधार लागू किये।
- नवउदारवादी नीतियों वाले कई देशों में आर्थिक असमानता बढ़ी है (उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका का गिनी गुणांक 1970 के दशक में ~0.34 से बढ़कर 2010 के दशक में ~0.41 हो गया)।

शास्त्रीय बनाम आधुनिक उदारवाद:

- **शास्त्रीय उदारवाद (मुख्यतः 17वीं-19वीं शताब्दी):**
  - **मौलिक विशेषता:** व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर मुख्य रूप से "नकारात्मक स्वतंत्रता" - सरकारी हस्तक्षेप *से स्वतंत्रता - के रूप में जोर दिया गया।*
  - **राज्य की भूमिका:** न्यूनतम राज्य या "रात्रि-प्रहरी राज्य" की वकालत की गई, जो अधिकारों की रक्षा, अनुबंधों को लागू करने और राष्ट्रीय सुरक्षा प्रदान करने तक सीमित हो।
  - **आर्थिक नीति:** मुक्त बाजार से समृद्धि आती है, ऐसा विश्वास करते हुए अहस्तक्षेप पूंजीवाद (एडम स्मिथ)।
  - **प्रमुख विचारक:** जॉन लोके, एडम स्मिथ, मोंटेस्क्यू।

- **आधुनिक उदारवाद (सकारात्मक उदारवाद - 19वीं सदी के अंत में उभरना):**

  - **दृष्टिकोण में बदलाव:** यह माना गया कि औद्योगिक पूंजीवाद ने नये अन्याय पैदा किये हैं तथा सच्ची स्वतंत्रता के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है।
  - **राज्य की भूमिका:** सामाजिक समस्याओं का समाधान करने, कल्याण प्रदान करने, अर्थव्यवस्था को विनियमित करने और अवसर की समानता ("सकारात्मक स्वतंत्रता") सुनिश्चित करने के लिए राज्य के हस्तक्षेप के प्रति अधिक सहानुभूति।
  - **आर्थिक नीति:** मिश्रित अर्थव्यवस्था और कल्याणकारी राज्य के लिए समर्थन (कीन्स से प्रभावित)।
  - **प्रमुख विचारक:** जे.एस. मिल (शास्त्रीय और आधुनिक का संयोजन), टी.एच. ग्रीन, एल.टी. हॉबहाउस , जॉन मेनार्ड कीन्स, जॉन रॉल्स।

शास्त्रीय बनाम आधुनिक बनाम नव-उदारवाद

विशेषता	शास्त्रीय उदारवाद	आधुनिक उदारवाद (सामाजिक)	neoliberalism
स्वतंत्रता का दृश्य	नकारात्मक (राज्य हस्तक्षेप *से स्वतंत्रता*)	सकारात्मक (क्षमता प्राप्त करने *की स्वतंत्रता* , राज्य समर्थन की आवश्यकता है)।	मुख्यतः नकारात्मक (राज्य विनियमन से आर्थिक स्वतंत्रता)।
राज्य की भूमिका	न्यूनतम ("रात्रि-चौकीदार");	सक्षम बनाना; बाजार की विफलताओं को	न्यूनतम; राज्य के हस्तक्षेप को "वापस" लें, बाजार तंत्र

	अधिकारों की रक्षा करना।	सुधारना, कल्याण प्रदान करना, अवसर सुनिश्चित करना ।	को बढ़ावा दें।
आर्थिक नीति	लेसेज-फेयर पूंजीवाद।	मिश्रित अर्थव्यवस्था, कल्याणकारी राज्य, विनियमन।	मुक्त बाजार, निजीकरण, विनियमन, राजकोषीय मितव्ययिता।
प्राथमिक लक्ष्य	व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करें, विशेष रूप से राज्य से।	सामाजिक न्याय और अवसर सुनिश्चित करके व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बढ़ाएं।	बाजार कट्टरवाद के माध्यम से आर्थिक दक्षता और विकास को अधिकतम करना।
प्रमुख प्रतिपादक	जॉन लोके, एडम स्मिथ.	जेएस मिल, टीएच ग्रीन, कीन्स, रॉल्स।	फ्रेडरिक हायेक, मिल्टन फ्रीडमैन, रॉबर्ट नोज़िक ।

नव-उदारवाद:

- 20वीं सदी के उत्तरार्ध में शास्त्रीय उदार आर्थिक विचारों का पुनरुद्धार और अनुकूलन।
- **केंद्रीय स्तंभ:** बाजार और व्यक्ति की प्रधानता। राज्य के हस्तक्षेप के प्रति संदेह।
- **लक्ष्य:** "राज्य की सीमाओं को पीछे ले जाना"; निजीकरण, विनियमन, मुक्त व्यापार, तथा बाजार-आधारित दक्षता, विकास और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए सरकारी व्यय में कमी जैसी नीतियों की वकालत करना।

बहुसंस्कृतिवाद

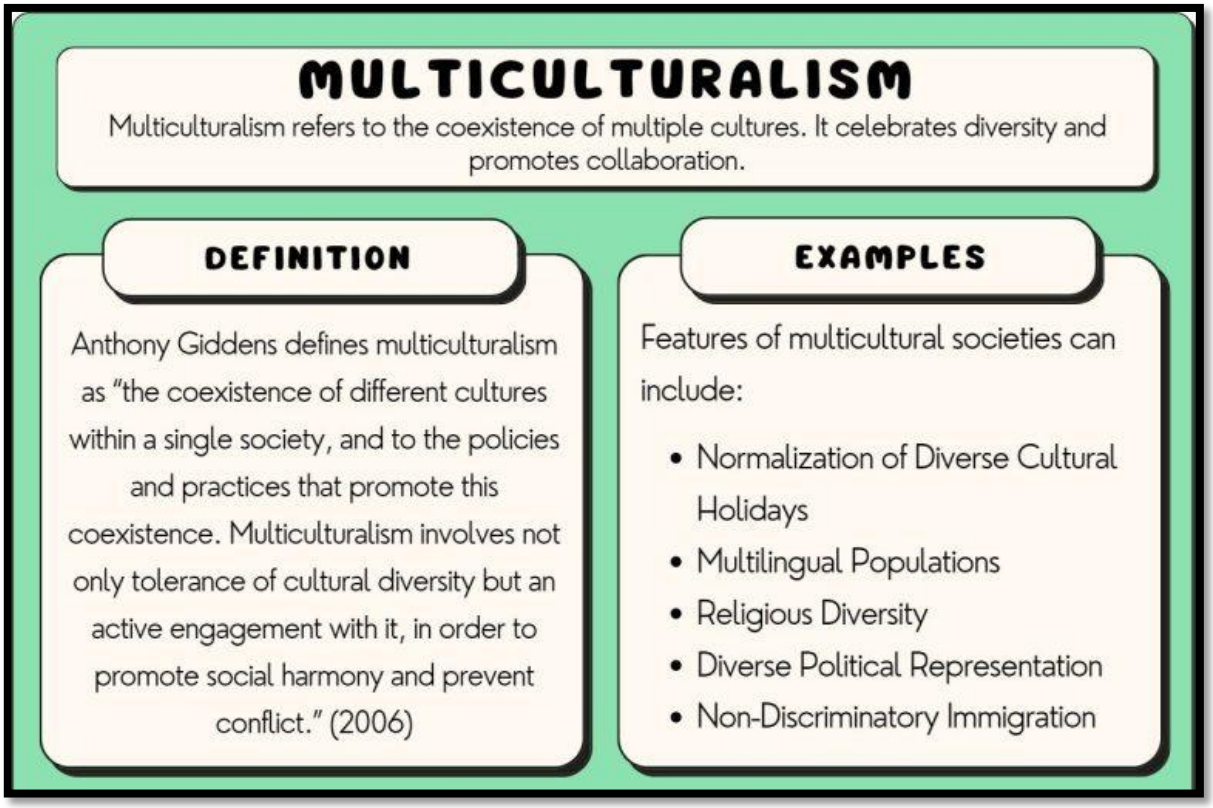

परिभाषा(एँ):

- **वर्णनात्मक अर्थ:** किसी समाज में सांस्कृतिक विविधता का अनुभवजन्य तथ्य, जहाँ विभिन्न नस्लीय, धार्मिक, भाषाई या जातीय समूह सह-अस्तित्व में रहते हैं। यह विविधता व्यवहार, मूल्यों और परंपराओं में प्रकट होती है।
- **मानक/वैचारिक भावना:** एक राजनीतिक दर्शन या सामाजिक आंदोलन जो सांस्कृतिक विविधता की सार्वजनिक मान्यता, समायोजन और समर्थन को सकारात्मक रूप से महत्व देता है और उसकी वकालत करता है।
- इसमें प्रायः ऐसी नीतियां शामिल होती हैं जो सुनिश्चित करती हैं कि अल्पसंख्यक संस्कृतियां फल-फूल सकें।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:** यद्यपि समाज प्रायः विविधतापूर्ण रहे हैं, फिर भी बहुसंस्कृतिवाद ने एक विशिष्ट विचारधारा के रूप में 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रमुखता प्राप्त की, जिसे

उत्तर-औपनिवेशिक प्रवास, पहचान की राजनीति के उदय, तथा पूर्ववर्ती आत्मसातीकरणवादी राष्ट्र-निर्माण मॉडलों की आलोचना से बल मिला।

- **उद्देश्य:** मात्र सहिष्णुता से आगे बढ़कर सक्रिय सम्मान, मान्यता और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व की ओर बढ़ना तथा सांस्कृतिक संघर्ष को कम करना।

- ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी (सार): 1 "वह नीति या प्रक्रिया जिसके द्वारा ऐसे समाज के भीतर सांस्कृतिक समूहों की विशिष्ट पहचान को बनाए रखा जाता है या समर्थन दिया जाता है।"
- **आंदोलन:** 20वीं सदी के उत्तरार्ध में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक, शैक्षणिक और सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ। यह इस बात पर जोर देता है कि सभी (या संस्कृतियों के कई पहलू) सम्मान और मान्यता के योग्य हैं, नागरिक अधिकारों और नारीवादी आंदोलनों से ताकत लेते हुए, जिन्होंने भेदभाव और पहचान को उजागर किया।

बहुसंस्कृतिवाद की परिभाषाएँ

---

1. विल किमलिक्का

- **परिभाषा:** “बहुसंस्कृतिवाद एक उदार लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर जातीय और सांस्कृतिक विविधता को समायोजित करने की नीति है।”
- स्रोत: *"बहुसांस्कृतिक नागरिकता"* , 1995 [1]

---

2. भीखू पारेख

- **परिभाषा:** "बहुसंस्कृतिवाद एक राजनीतिक समुदाय के भीतर एकता और विविधता, समानता और भिन्नता के उचित शब्दों के बारे में है।"
- **स्रोत:** *"बहुसंस्कृतिवाद पर पुनर्विचार"* , 2000

---

3. यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र)

- परिभाषा: "बहुसंस्कृतिवाद नस्लीय, धार्मिक या सांस्कृतिक समूहों सहित विविध संस्कृतियों के सह-अस्तित्व को संदर्भित करता है, और यह प्रथागत व्यवहार, सांस्कृतिक मान्यताओं और मूल्यों, सोच के पैटर्न और संचार शैलियों में प्रकट होता है।" [2]

---

4. चार्ल्स टेलर

- **परिभाषा:** "बहुसंस्कृतिवाद एक साझा राजनीतिक समुदाय के भीतर सांस्कृतिक पहचान और समूह-विशिष्ट अधिकारों की मान्यता की मांग है।"
- स्रोत: *"मान्यता की राजनीति"* , 1994 [3]

---

5. तारिक मोदूद

- **परिभाषा:** "बहुसंस्कृतिवाद वह विचार है जिसके अनुसार सांस्कृतिक मतभेदों को मान्यता दी जानी चाहिए और सार्वजनिक संस्थाओं, कानूनों और नीतियों में उन्हें समायोजित किया जाना चाहिए।"
- **प्रसिद्ध:** यूरोप में सांस्कृतिक बहुलवाद और एकीकरण

---

6. जोसेफ़ रज़

- **परिभाषा:** "बहुसंस्कृतिवाद की आवश्यकता है कि व्यक्तियों और समूहों के साथ समान सम्मान के साथ व्यवहार किया जाए, भले ही उनके मूल्य बहुसंख्यकों से भिन्न हों।"
- **नोट:** उदार दार्शनिक – मूल्य बहुलवाद का समर्थन करता है [4]

बहुसंस्कृतिवाद के मूल सिद्धांत

सिद्धांत	विवरण एवं निहितार्थ
विविधता की मान्यता	यह स्वीकार किया जाता है कि आधुनिक समाज विविध सांस्कृतिक समूहों से बना है; यह विविधता एक प्रमुख सामाजिक विशेषता है।
सांस्कृतिक पहचान का सम्मान	तर्क है कि किसी व्यक्ति की सांस्कृतिक पहचान उसके आत्मसम्मान, गरिमा और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है; संस्कृति एक "पसंद का संदर्भ" प्रदान करती है (किमलिक्का)।
समूहों के बीच समानता	इसका उद्देश्य न केवल व्यक्तिगत समानता प्राप्त करना है, बल्कि विभिन्न सांस्कृतिक समूहों *के बीच समानता स्थापित करना* है, तथा बहुसंख्यक संस्कृतियों के प्रभुत्व को चुनौती देना है।
चुनौतीपूर्ण आत्मसात	इस अपेक्षा की आलोचना करते हैं कि अल्पसंख्यकों को समाज के पूर्ण सदस्य के रूप में स्वीकार किए जाने के लिए अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को त्यागना होगा। पहचान बनाए रखने के साथ एकीकरण का समर्थन करते हैं।

समूह-विशिष्ट अधिकार (कुछ सिद्धांतों में)	अपनी संस्कृति की रक्षा करने और संभावित बहुसंख्यक दबावों के विरुद्ध निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए विशिष्ट सामूहिक अधिकारों (जैसे, स्वशासन, बहुजातीय अधिकार) की आवश्यकता हो सकती है।
अंतरसांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देना	यह विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के बीच संवाद, शिक्षा और अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करता है ताकि पूर्वाग्रह को कम किया जा सके और पारस्परिक सम्मान के आधार पर सामाजिक सामंजस्य का निर्माण किया जा सके।

बहुसंस्कृतिवाद में मुख्य विचार/तर्क:

- **गैर-भेदभाव और समानता का आदर्श:**
  - यह व्यक्तिगत गैर-भेदभाव से आगे बढ़कर सांस्कृतिक अल्पसंख्यक समूहों द्वारा सामना किए जाने वाले प्रणालीगत नुकसानों को संबोधित करता है। यह सांस्कृतिक पहचान को भेदभाव की एक संभावित धुरी के रूप में पहचानता है जिसके लिए विशिष्ट उपायों की आवश्यकता होती है।

- **सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देना (विविधता का मूल्य):**
  - इसका उद्देश्य आत्मसात करने वाले दबावों का प्रतिकार करना है। विविधता को भेदभाव को कम करने, विभिन्न दृष्टिकोणों और प्रथाओं के साथ समाज को समृद्ध बनाने और जीवन के विभिन्न तरीकों के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए महत्व दिया जाता है। **चार्ल्स टेलर का** तर्क है कि संस्कृतियाँ अपरिहार्य "अर्थ के क्षितिज" प्रदान करती हैं।

- **विभेदित नागरिकता (समूह-विशिष्ट अधिकार) का विचार:**
  - विशुद्ध रूप से "अंतर-अंधा" सार्वभौमिक नागरिकता को अस्वीकार करता है, यह तर्क देते हुए कि यह अक्सर प्रमुख सांस्कृतिक मानदंडों को दर्शाता है और अल्पसंख्यकों के हाशिए पर जाने का कारण बन सकता है (**आइरिस मैरियन यंग द्वारा "सांस्कृतिक साम्राज्यवाद" गढ़ा गया**)। वास्तविक समानता सुनिश्चित करने और सांस्कृतिक पहचान को समायोजित करने के लिए कुछ समूहों के लिए विशेष या विभेदित अधिकारों (जैसे, स्वशासन, बहुजातीय अधिकार) की वकालत करता है।

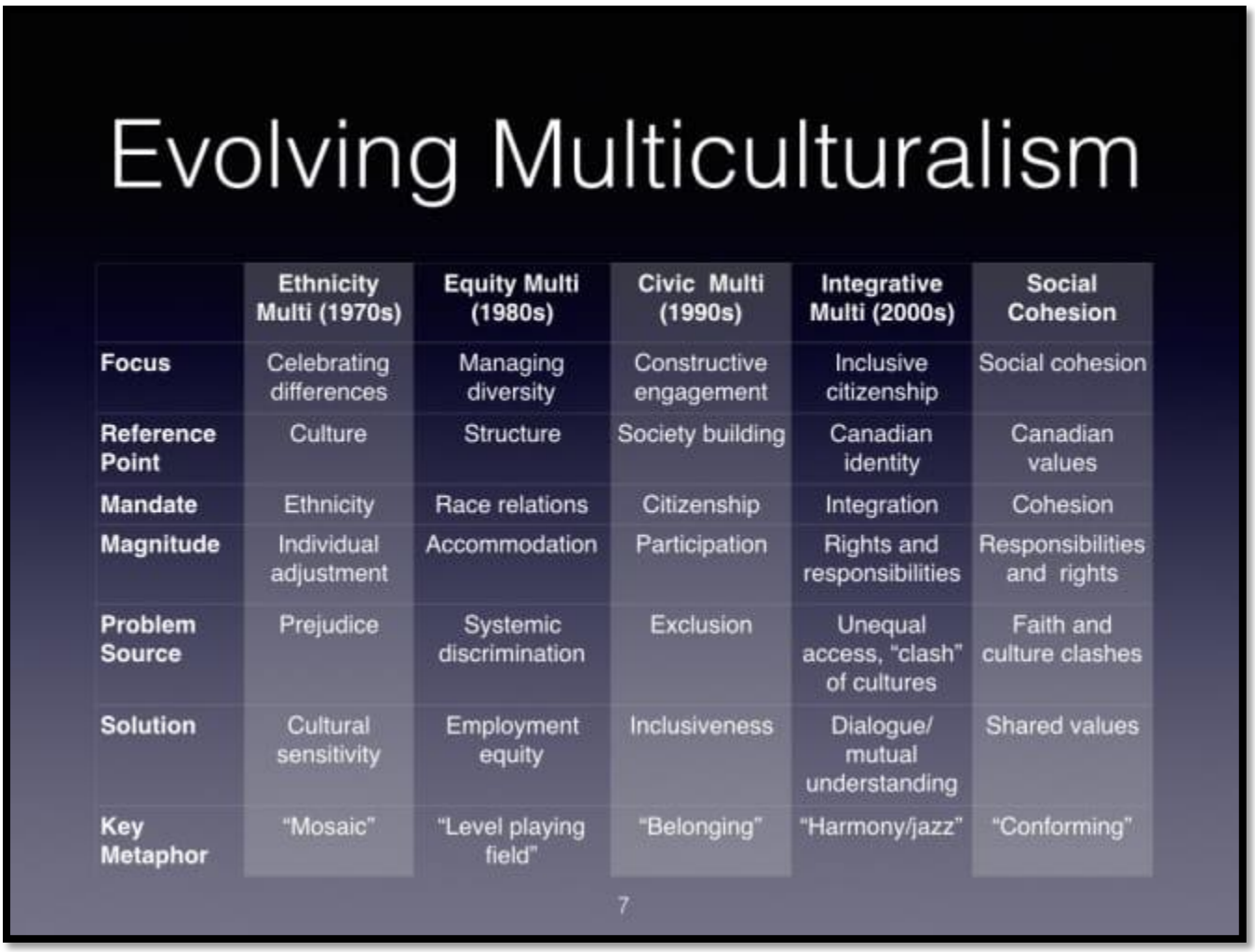

बहुसंस्कृतिवाद की आलोचना

- **व्यक्तिगत स्वायत्तता और आंतरिक अल्पसंख्यकों के लिए खतरा:** नीतियाँ व्यक्तियों की तुलना में समुदायों को सशक्त बना सकती हैं, जिससे अल्पसंख्यक संस्कृतियों में असहिष्णु प्रथाओं को बढ़ावा मिल सकता है, विशेष रूप से महिलाओं या असहमत लोगों को नुकसान पहुँच सकता है
- (ओकिन : "क्या बहुसंस्कृतिवाद महिलाओं के लिए बुरा है?") *चिंता: समूह के अधिकार समूह के भीतर व्यक्तिगत अधिकारों को कमजोर कर सकते हैं।*

- **सामाजिक विखंडन और राष्ट्रीय एकता की समस्या:** सांस्कृतिक विशिष्टता पर जोर देने से सामाजिक विभाजन, यहूदी बस्ती बन सकती है और साझा राष्ट्रीय पहचान या नागरिक एकजुटता कमजोर हो सकती है (अमर्त्य सेन , ब्रायन बैरी)।
- *चिंता: सामाजिक एकता को कमजोर करता है।*

- **कॉस्मोपॉलिटन आलोचना:** निश्चित, अलग-अलग संस्कृतियों के विचार पर सवाल उठाता है, इसके बजाय वैश्वीकृत दुनिया में तरल पहचान और सांस्कृतिक संकरता पर जोर देता है।

नीतियाँ कृत्रिम रूप से सीमाओं को संरक्षित कर सकती हैं (जेरेमी वाल्ड्रोन, सेयला बेनहबीब).

- *चिंता: सांस्कृतिक गतिशीलता और अंतर्संबंध को नजरअंदाज करना।*

- **सापेक्षवाद और असहिष्णु को सहन करने का जोखिम:** सभी सांस्कृतिक प्रथाओं की अविवेकी स्वीकृति सांस्कृतिक सापेक्षवाद को जन्म दे सकती है या अनुदार समूहों को बलपूर्वक सहन करने के लिए मजबूर कर सकती है, जो संभावित रूप से सार्वभौमिक मानव अधिकारों या मूल उदार मूल्यों को कमजोर कर सकती है (ब्रूस बावर)।
- *चिंता: मौलिक नैतिक सिद्धांतों से समझौता हो सकता है।*

बहुसंस्कृतिवाद, विविधता और समावेश को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, कई दार्शनिक, राजनीतिक और व्यावहारिक आलोचनाओं का विषय रहा है। ये आलोचनाएँ विभिन्न वैचारिक दृष्टिकोणों से आती हैं, जिनमें उदारवादी, नारीवादी, राष्ट्रवादी और सार्वभौमिकतावादी शामिल हैं ।

---

1. उदारवादी आलोचना

- **मुख्य आलोचक:** ब्रायन बैरी (*संस्कृति और समानता* , 2001)
- उनका तर्क है कि बहुसंस्कृतिवाद उदारवादी समानता को कमजोर करता है।
- समूहों के साथ अलग-अलग व्यवहार करना कानून के तहत समान व्यवहार का उल्लंघन है।
- समूह-विभेदित अधिकार विभाजन को बढ़ावा दे सकते हैं तथा व्यक्तिगत स्वायत्तता को बाधित कर सकते हैं।
- सार्वजनिक संस्थाओं को तटस्थ होना चाहिए और सांस्कृतिक मांगों को समायोजित नहीं करना चाहिए।

---

2. नारीवादी आलोचना

- **प्रमुख आलोचक:** सुसान मोलर ओकिन , मार्था नुसबाम
- बहुसंस्कृतिवाद के नाम पर कायम रखी गई कुछ सांस्कृतिक प्रथाएं पितृसत्तात्मक हैं।
- सांस्कृतिक परंपराओं (जैसे, जबरन विवाह, पर्दा प्रथा, महिला जननांग विकृति) को संरक्षित करने के लिए महिलाओं के अधिकारों का बलिदान किया जा सकता है।
- सुसान ओकिन का प्रश्न: "क्या बहुसंस्कृतिवाद महिलाओं के लिए बुरा है?"
- सांस्कृतिक सापेक्षवाद सार्वभौमिक मानव अधिकारों के साथ टकराव पैदा कर सकता है, विशेषकर व्यक्तिगत कानूनों के मामले में।

---

3. राष्ट्रवादी आलोचना

- **मुख्य चिंताएं:**
  - कहा जाता है कि बहुसंस्कृतिवाद राष्ट्रीय पहचान और सामाजिक एकता के लिए खतरा है।
  - अलगाव और "समानांतर समाजों" के गठन को प्रोत्साहित करता है।
  - साझा मूल्यों को कमजोर करता है, जिससे राष्ट्रीय एकजुटता में गिरावट आती है।
  - बहुसंख्यकों के मूल्यों और विरासत की तुलना में अल्पसंख्यकों के अधिकारों को प्राथमिकता देने के लिए आलोचना की गई।

---

4. सामुदायिक आलोचना

- **दृष्टिकोण:**
  - व्यक्तिगत अधिकारों पर बहुत अधिक ध्यान देने से सामुदायिक बंधन कमजोर होते हैं।
  - समाज को प्रतिस्पर्धी सांस्कृतिक हितों में विभाजित कर सकता है।
  - राजनीतिक समुदाय समान लक्ष्यों और मूल्यों पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल विविधता पर।

---

5. रिपब्लिकन आलोचना

- **केंद्र:**
  - नागरिकता को सार्वभौमिक नागरिक पहचान पर जोर देना चाहिए, न कि समूह संबद्धता पर।
  - समूह-आधारित अधिकार एकजुटता और विचार-विमर्श जैसे नागरिक गणतांत्रिक गुणों को कमजोर कर सकते हैं।
  - विखंडित सार्वजनिक क्षेत्र को बढ़ावा देता है।

---

6. व्यावहारिक और नीतिगत आलोचनाएँ

- बहुसंस्कृतिवाद प्रतीकात्मक हो सकता है - वास्तविक सशक्तिकरण के बिना प्रतीकात्मक।
- नीतियाँ पहचान को अनिवार्य बना सकती हैं (समूहों को समरूप और निश्चित मान सकती हैं)।
- आंतरिक असंतोष को नियंत्रित करने के लिए रूढ़िवादी धार्मिक या जातीय अभिजात वर्ग द्वारा बहुसांस्कृतिक नीतियों का दुरुपयोग।
- इससे बहुसंख्यक समूहों में विपरीत भेदभाव या नाराजगी पैदा हो सकती है।

" अंतरसंस्कृतिवाद " या "उत्तर-बहुसंस्कृतिवाद" की ओर बदलाव

- आलोचक अंतरसांस्कृतिक संवाद और साझा नागरिक मूल्यों का प्रस्ताव रखते हैं।
- समूह अलगाव के बजाय एकीकरण, अंतःक्रिया और सामान्य नागरिकता पर ध्यान केंद्रित करें।

आलोचनाओं की सारांश तालिका:

प्रकार	आलोचक	मुख्य तर्क
उदार	ब्रायन बैरी	समान नागरिकता और कानूनी तटस्थता को कमजोर करता है
नारीवादी	सुसान ओकिन , मार्था नुसबाम	संस्कृति के नाम पर लैंगिक असमानता को मजबूत करना
राष्ट्रवादी	सामान्य रूप से देखें	राष्ट्रीय एकता और सामंजस्य के लिए खतरा
मम्यून का सादस्य	विभिन्न	सामुदायिक बंधनों को नष्ट करना; विविधता पर अत्यधिक जोर
रिपब्लिकन	फिलिप पेटिट (अप्रत्यक्ष रूप से)	नागरिकता को साझा नागरिक पहचान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए
व्यावहारिक/नीति	नीति विश्लेषक, सामाजिक आलोचक	समूह अधिकारों का दुरुपयोग; अनिवार्यता और अलगाव को बढ़ावा देता है

बहुसंस्कृतिवाद के प्रमुख व्यक्ति

- **चार्ल्स टेलर:** समुदायवाद से प्रभावित उदारवादी। उनकी "राजनीति की मान्यता" का तर्क है कि किसी समूह के सांस्कृतिक मूल्य की गैर-मान्यता या गलत पहचान गंभीर नुकसान पहुंचाती है। संवाद और संस्कृतियों के जीवित रहने की आवश्यकता पर जोर दिया क्योंकि वे व्यक्तियों के लिए आवश्यक अर्थ प्रदान करते हैं।

- **विल किमलिका :** बहुसंस्कृतिवाद के अग्रणी उदारवादी सिद्धांतकार। तर्क देते हैं कि संस्कृति "पसंद का संदर्भ" प्रदान करती है, जो व्यक्तिगत स्वायत्तता के लिए महत्वपूर्ण है। इनमें अंतर करते हैं:
  - **राष्ट्रीय अल्पसंख्यक** (जैसे, स्वदेशी लोग): **स्वशासन के अधिकार के हकदार** ।
  - **जातीय समूह (आमतौर पर स्वैच्छिक आप्रवासी): बहुजातीय अधिकारों** (बड़े समाज के भीतर संस्कृति को व्यक्त करने के लिए) और **विशेष प्रतिनिधित्व अधिकारों के** हकदार हैं । ये समूह-विभेदित अधिकार उदार न्याय के अनुकूल हैं और कभी-कभी इसके लिए आवश्यक भी होते हैं।

- **भीखू पारेख:** एक अधिक बहुलवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जो सार्वभौमिक रूप से विशुद्ध उदार ढांचे को लागू करने की आलोचना करते हैं। तर्क देते हैं कि मनुष्य "सांस्कृतिक रूप से निर्मित" हैं, और बहुसांस्कृतिक समाज में साझा मूल्यों पर बातचीत करने के लिए अंतर-सांस्कृतिक संवाद महत्वपूर्ण है। उदारवाद अन्य परंपराओं में से एक मूल्यवान परंपरा है।

प्रमुख बहुसांस्कृतिक सिद्धांतकारों की तुलना (मुख्य फोकस और अधिकारों का औचित्य)

विशेषता	चार्ल्स टेलर	विल किमलिका	भीखू पारेख
प्राथमिक चिंता	मान्यता की राजनीति, सांस्कृतिक अस्तित्व और गरिमा सुनिश्चित करना।	उदार न्याय को अल्पसंख्यक अधिकारों के साथ सामंजस्य स्थापित करना, सांस्कृतिक सदस्यता के माध्यम से व्यक्तिगत स्वायत्तता सुनिश्चित करना।	वास्तविक अंतरसांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देना, उदार सार्वभौमिकता की सीमाओं की आलोचना करना।
संस्कृति का मूल्य	पहचान के लिए अपरिहार्य "अर्थ के क्षितिज" प्रदान करता है।	व्यक्तिगत स्वायत्तता के लिए आवश्यक "विकल्प का संदर्भ" प्रदान करता है।	मूलतः मानव का "गठन"; मूल्यवान मानव विविधता का स्रोत।
समूह अधिकारों का औचित्य	गलत पहचान से होने वाली हानि को रोकने के लिए; संस्कृतियों में अंतर्निहित मूल्य होते हैं।	अल्पसंख्यक समूह के सदस्यों के लिए वास्तविक समानता सुनिश्चित करना तथा स्वायत्त विकल्प हेतु उनकी क्षमता की रक्षा करना।	अंतर-सांस्कृतिक संबंधों में निष्पक्षता सुनिश्चित करना तथा मानव समृद्धि के विविध रूपों का सम्मान करना; संवाद से ही उभर कर आता है।
मुख्य अवधारणा/कार्य	"मान्यता की राजनीति"	"बहुसांस्कृतिक नागरिकता," "सामाजिक संस्कृतियाँ," विभेदित अधिकार	"बहुसंस्कृतिवाद पर पुनर्विचार," अंतरसांस्कृतिक संवाद, सांस्कृतिक बहुलवाद

बहुसंस्कृतिवाद के रूप/मॉडल

- **एंड्रयू हेवुड:**
  - **वर्णनात्मक बहुसंस्कृतिवाद:** सांस्कृतिक विविधता एक सामाजिक तथ्य के रूप में *विद्यमान रहती है।*
  - **मानक बहुसंस्कृतिवाद:** समूह अधिकारों या समाज को लाभ (जैसे, समृद्धि, न्याय) के आधार पर सांस्कृतिक विविधता का सक्रिय रूप से समर्थन और प्रचार करता है।

- **राजीव भार्गव (अंतर के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण का चित्रण करते हुए):**
  - **विशिष्ट पदानुक्रम:** एक संस्कृति अन्य पर हावी होती है (उदाहरणार्थ, ऐतिहासिक जाति व्यवस्था)।
  - **सार्वभौमिक समानता (आत्मसातीकरण):** सांस्कृतिक मतभेदों के सार्वजनिक महत्व को नकारता है, एकरूपता को बढ़ावा देता है (उदाहरण के लिए, फ्रेंच लैसिटे)।
  - **विशिष्ट समानता (बहुसांस्कृतिक मॉडल):** समूहों को अलग-अलग लेकिन समान मानता है; समुदायों के बीच समानता महत्वपूर्ण है।

- **अशोक चास्कर (सामान्य प्रकार):**
  - **लोकतांत्रिक बहुसंस्कृतिवाद:** विविधता को मान्यता देता है, संवाद के माध्यम से संघर्षों का समाधान करता है, विविधता और स्वतंत्रता पर जोर देता है।
  - **रूढ़िवादी बहुसंस्कृतिवाद:** विविधता को सतही तौर पर स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन प्रमुख मानदंडों के अनुरूप होने की अपेक्षा करते हैं, अक्सर गहन बहुलवाद से सावधान रहते हैं।
  - **उदार बहुसंस्कृतिवाद:** व्यक्तिगत अधिकारों और स्वायत्तता को प्राथमिकता देता है, लेकिन यह सुनिश्चित करना चाहता है कि सांस्कृतिक सदस्यता नुकसानदेह न हो (उदाहरण के लिए, किमलिक्का)।

- **नीति उदाहरण (विशिष्ट पहलू सहित संक्षिप्त):**

  - **कनाडा:** "द्विभाषी ढांचे के भीतर बहुसंस्कृतिवाद" की आधिकारिक नीति (1971); बहुसंस्कृतिवाद अधिनियम (1988)। इसका उद्देश्य विविधता को पहचानना, समान भागीदारी को बढ़ावा देना और संस्थानों को समावेशी बनाने में सहायता करना है। *उदाहरण: विरासत भाषा कार्यक्रमों के लिए वित्तपोषण।*
  - **ऑस्ट्रेलिया:** आत्मसातीकरण से बदलाव ("व्हाइट ऑस्ट्रेलिया नीति" औपचारिक रूप से 1973 में समाप्त हो गई) बहुसंस्कृतिवाद की ओर। नस्लीय भेदभाव अधिनियम (1975)। नीतियाँ सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक न्याय (समानता) और उत्पादक विविधता पर ध्यान केंद्रित करती हैं। *उदाहरण: सरकार द्वारा वित्तपोषित विशेष प्रसारण सेवा (SBS) बहुभाषी टीवी और रेडियो प्रदान करती है।*

10 अभ्यास एमसीक्यू

प्रश्न 1. नागरिकता पर विचारकों और उनके मूल विचारों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:

सूची I (विचारक)	**सूची II (नागरिकता पर मूल विचार)**
(ए) अरस्तू	(I) नागरिकता एक दर्जा है जो उन लोगों को दिया जाता है जो किसी समुदाय के पूर्ण सदस्य होते हैं।
(बी) टीएच मार्शल	(II) नागरिकता "अधिकार पाने का अधिकार" है।
(सी) जीन-जैक्स रूसो	(III) नागरिक वह व्यक्ति है जिसके पास विचार-विमर्श या न्यायिक प्रशासन में भाग लेने की शक्ति है।
(डी) हन्ना अरेंड्ट	(IV) "सामान्य इच्छा" के तहत सामूहिक संप्रभुता के रूप में नागरिकता।

कोड:
(1) (ए)-(III), (बी)-(आई), (सी)-(IV), (डी)-(II)
(2) (ए)-(आई), (बी)-(द्वितीय), (सी)-(III), (डी)-(IV)
(3) (ए)-(IV), (बी)-(III), (सी)-(I), (D)-(II)
(4) (ए)-(द्वितीय), (बी)-(IV), (सी)-(आई), (डी)-(III)

उत्तर : (1)
स्पष्टीकरण:

- अरस्तू ने अपनी कृति *राजनीति में* नागरिक की परिभाषा ऐसे व्यक्ति के रूप में की है जिसके पास किसी भी राज्य के विचार-विमर्श या न्यायिक प्रशासन में भाग लेने की शक्ति होती है, तथा उन्होंने सक्रिय भागीदारी पर बल दिया है।
- टी.एच. मार्शल ने *नागरिकता और सामाजिक वर्ग में* नागरिकता को एक ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित किया है जो पूर्ण सामुदायिक सदस्यता से जुड़ी होती है, जहां स्थिति धारक उस स्थिति से प्राप्त अधिकारों और कर्तव्यों के संबंध में समान होते हैं।
- जीन-जैक्स रूसो ने *द सोशल कॉन्ट्रैक्ट में* नागरिकता को "सामान्य इच्छा" के तहत एकजुट होने वाले व्यक्तियों के रूप में वर्णित किया है, जो एक सामूहिक संप्रभुता का निर्माण करते हैं।
- हन्ना अरेंड्ट ने अपनी पुस्तक *द ओरिजिन्स ऑफ टोटालिटेरियनिज्म में* नागरिकता को "अधिकार पाने का अधिकार" के रूप में परिभाषित किया है, तथा राजनीतिक सदस्यता के मौलिक महत्व पर प्रकाश डाला है।

- ये परिभाषाएँ नागरिकता की अवधारणा तथा व्यक्ति और राज्य के बीच संबंध को समझने के लिए अलग-अलग दार्शनिक दृष्टिकोणों को प्रतिबिंबित करती हैं।
- यह मिलान प्रत्येक विचारक को नागरिकता सिद्धांत में उनके विशिष्ट और प्रभावशाली योगदान के साथ सही ढंग से संरेखित करता है, जैसा कि प्रदान किए गए पाठ में रेखांकित किया गया है।

प्रश्न 2. नागरिकता प्राप्त करने के तरीकों और उनके आधार के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित करें:

सूची I (अधिग्रहण का तरीका)	**सूची II (आधार/सामान्य शब्दावली)**
(ए) जूस सोली	(I) रक्त संबंध
(बी) जस सैंग्विनिस	(II) कानूनी प्रक्रिया
(सी) प्राकृतिककरण	(III) जन्म स्थान
(डी) निवेश द्वारा	(IV) "गोल्डन वीज़ा"

कोड:
(1) (ए)-(आई), (बी)-(III), (सी)-(IV), (डी)-(II)
(2) (ए)-(III), (बी)-(आई), (सी)-(II), (डी)-(IV)
(3) (ए)-(द्वितीय), (बी)-(IV), (सी)-(आई), (डी)-(III)
(4) (ए)-(IV), (बी)-(II), (सी)-(III), (डी)-(I)

उत्तर : (2)
स्पष्टीकरण:

- जूस सोली, जिसका अर्थ है "मिट्टी का अधिकार", किसी राज्य के भूभाग में जन्म लेने वाले लोगों को नागरिकता प्रदान करता है।
- जूस सैंग्विनिस , जिसका अर्थ है "रक्त का अधिकार", नागरिक माता-पिता से वंश के माध्यम से नागरिकता प्राप्त करने की अनुमति देता है।
- प्राकृतिकीकरण वह कानूनी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक गैर-नागरिक राज्य द्वारा निर्धारित विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद नागरिकता प्राप्त करता है।
- निवेश द्वारा नागरिकता, जिसे कभी-कभी "गोल्डन वीज़ा" के रूप में संदर्भित किया जाता है, कुछ राज्यों द्वारा उन व्यक्तियों को प्रदान की जाती है जो देश में महत्वपूर्ण आर्थिक निवेश करते हैं।
- ये तरीके विभिन्न कानूनी सिद्धांतों और प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका उपयोग राज्य यह निर्धारित करने के लिए करते हैं कि कौन नागरिक होने की योग्यता रखता है।

- दस्तावेज़ में दी गई तालिका इन विधियों और उनके संगत आधारों या सामान्य शब्दावलियों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है।

3. अभिकथन (A): टी.एच. मार्शल के अनुसार, शिक्षा और कल्याण जैसे सामाजिक अधिकार व्यक्तियों के लिए अपने नागरिक और राजनीतिक अधिकारों का पूर्ण प्रयोग करने के लिए आवश्यक हैं।
कारण (R): टी.एच. मार्शल ने तर्क दिया कि नागरिकता तीन चरणों में विकसित हुई: 18वीं शताब्दी में नागरिक अधिकार, 19वीं शताब्दी में राजनीतिक अधिकार और 20वीं शताब्दी में सामाजिक अधिकार।
कोड:
(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(3) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है.

उत्तर : (1)
स्पष्टीकरण:

- टी.एच. मार्शल ने अपनी कृति *नागरिकता और सामाजिक वर्ग* (1950) में प्रस्तावित किया कि नागरिकता में तीन विकासशील आयाम शामिल हैं: नागरिक, राजनीतिक और सामाजिक अधिकार।
- उन्होंने तर्क दिया कि सामाजिक अधिकार, जिसमें आर्थिक कल्याण, सुरक्षा, शिक्षा और सामाजिक विरासत में भागीदारी के अधिकार शामिल हैं, बुनियादी स्तर की खुशहाली सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं।
- मार्शल ने तर्क दिया कि इन सामाजिक अधिकारों के बिना, नागरिक और राजनीतिक अधिकारों द्वारा प्रदान की गई औपचारिक समानता कमजोर हो जाएगी, क्योंकि बुनियादी कल्याण और शिक्षा के अभाव में व्यक्ति समाज में सार्थक रूप से भाग नहीं ले सकते हैं या अपने अन्य अधिकारों का प्रयोग नहीं कर सकते हैं।
- कारण (R) मार्शल द्वारा इन अधिकारों के विकास के ऐतिहासिक अनुक्रम को सटीक रूप से बताता है: नागरिक अधिकार (18वीं शताब्दी), राजनीतिक अधिकार (19वीं शताब्दी), और सामाजिक अधिकार (20वीं शताब्दी)।
- अभिकथन (A) मार्शल के इस दृष्टिकोण को सही ढंग से दर्शाता है कि सामाजिक अधिकार नागरिक और राजनीतिक अधिकारों के सार्थक प्रयोग के लिए मौलिक हैं, जो भागीदारी को समान बनाते हैं।
- इसलिए, (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R) सैद्धांतिक और ऐतिहासिक रूपरेखा प्रदान करता है जो बताता है कि मार्शल ने सामाजिक अधिकारों को आवश्यक क्यों माना जैसा कि (A) में कहा गया है।

उदारवाद के प्रमुख विचारकों और उनके प्रभावशाली कार्यों के संबंध में सूची I को सूची II **से** सुमेलित कीजिए :

सूची I (विचारक)	**सूची II (मुख्य कार्य)**
(ए) जॉन रॉल्स	(I) *स्वतंत्रता पर*
(बी) रॉबर्ट नोज़िक	(II) *स्वतंत्रता की दो अवधारणाएँ*
(सी) जॉन स्टुअर्ट मिल	(III) *न्याय का सिद्धांत*
(डी) इसायाह बर्लिन	(IV) *अराजकता, राज्य और स्वप्नलोक*

कोड:
(1) (ए)-(III), (बी)-(IV), (सी)-(आई), (डी)-(II)
(2) (ए)-(आई), (बी)-(द्वितीय), (सी)-(III), (डी)-(IV)
(3) (ए)-(IV), (बी)-(III), (सी)-(II), (डी)-(I)
(4) (ए)-(द्वितीय), (बी)-(आई), (सी)-(IV), (डी)-(III)

उत्तर : (1)
स्पष्टीकरण:

- *ए थ्योरी ऑफ जस्टिस (1971)* के लिए प्रसिद्ध हैं , जहां उन्होंने "निष्पक्षता के रूप में न्याय" और "अज्ञानता का पर्दा" जैसी अवधारणाओं को प्रस्तुत किया।
- रॉबर्ट नोज़िक ने *एनार्की, स्टेट, एंड यूटोपिया (1974)* नामक पुस्तक लिखी , जिसमें उन्होंने रॉल्स की स्वतंत्रतावादी आलोचना प्रस्तुत की तथा न्यूनतम राज्य की वकालत की।
- जॉन स्टुअर्ट मिल, जो शास्त्रीय और आधुनिक उदारवाद के बीच सेतु का काम करते थे, ने *ऑन लिबर्टी* (1859) लिखी, जिसमें उन्होंने हानि सिद्धांत और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर चर्चा की।
- इसायाह बर्लिन अपने निबंध *टू कॉन्सेप्ट्स ऑफ लिबर्टी* (1958) के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसमें उन्होंने नकारात्मक स्वतंत्रता (हस्तक्षेप से स्वतंत्रता) और सकारात्मक स्वतंत्रता (आत्म-नियंत्रण) के बीच अंतर बताया है।
- ये जोड़ियां प्रमुख उदार विचारकों को उनके मौलिक ग्रंथों के साथ सही ढंग से जोड़ती हैं, जैसा कि प्रदान किए गए दस्तावेज़ में पहचाना गया है।
- उदारवादी विचार के विकास और विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए इन प्रमुख कार्यों को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 5. उदारवाद के मूल सिद्धांतों और उनके विवरण के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित करें:

सूची I (सिद्धांत)	**सूची II (विवरण)**
(ए) व्यक्तिवाद	(I) वैध सरकार शासितों की सहमति से अपना अधिकार प्राप्त करती है।
(बी) सहमति और सामाजिक अनुबंध	(II) विविध विश्वासों को स्वीकार करने और उनका सम्मान करने की इच्छा, बशर्ते कि वे दूसरों को नुकसान न पहुँचाएँ।
(सी) सीमित सरकार और संविधानवाद	(III) व्यक्ति नैतिक और राजनीतिक चिंता की प्राथमिक इकाई है; व्यक्तिगत अधिकार सर्वोपरि हैं।
(डी) सहनशीलता	(IV) सरकार की शक्ति को संविधान, कानून के शासन और अत्याचार को रोकने के लिए जाँच और संतुलन द्वारा प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

कोड:
(1) (ए)-(आई), (बी)-(III), (सी)-(II), (डी)-(IV)
(2) (ए)-(III), (बी)-(आई), (सी)-(IV), (डी)-(II)
(3) (ए)-(द्वितीय), (बी)-(IV), (सी)-(आई), (डी)-(III)
(4) (ए)-(IV), (बी)-(II), (सी)-(III), (डी)-(I)

उत्तर : (2)
स्पष्टीकरण:

- व्यक्तिवाद का मानना है कि व्यक्ति नैतिक और राजनीतिक सरोकार की प्राथमिक इकाई है, और व्यक्तिगत अधिकार सर्वोपरि हैं।
- सहमति और सामाजिक अनुबंध सिद्धांत यह मानता है कि वैध सरकार अपना अधिकार शासितों की सहमति से प्राप्त करती है, जिसे अक्सर सामाजिक अनुबंध के माध्यम से संकल्पित किया जाता है।
- सीमित सरकार और संविधानवाद का मानना है कि सरकार की शक्ति को संविधान, कानून के शासन, शक्तियों के पृथक्करण और अत्याचार को रोकने के लिए जांच और संतुलन द्वारा प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।
- सहिष्णुता विविध विश्वासों, प्रथाओं और जीवन-शैली को स्वीकार करने और उनका सम्मान करने की इच्छा है, बशर्ते कि वे दूसरों को नुकसान न पहुंचाएं, और यह शांति के लिए महत्वपूर्ण है।
- ये सिद्धांत उदारवादी दर्शन के लिए मौलिक हैं, जो शासन, व्यक्तिगत अधिकारों और सामाजिक संगठन के प्रति इसके दृष्टिकोण को आकार देते हैं।

- उपलब्ध कराए गए दस्तावेज़ में इन सिद्धांतों और उनके विवरण को "उदारवाद के प्रमुख सिद्धांतों" नामक तालिका में स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है।

प्रश्न 6. अभिकथन (A): शास्त्रीय उदारवाद मुख्य रूप से "नकारात्मक स्वतंत्रता" पर जोर देता है, जो सरकारी हस्तक्षेप से स्वतंत्रता पर केंद्रित है।
कारण (R): 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उभरने वाला आधुनिक उदारवाद, सामाजिक समस्याओं के समाधान और "सकारात्मक स्वतंत्रता" सुनिश्चित करने के लिए राज्य के हस्तक्षेप के प्रति अधिक सहानुभूतिपूर्ण हो गया।
कोड:
(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(3) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है.

उत्तर : (2)
स्पष्टीकरण:

- अभिकथन (A) सत्य है; 17वीं से 19वीं शताब्दी तक प्रचलित शास्त्रीय उदारवाद ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर मुख्य रूप से "नकारात्मक स्वतंत्रता" के रूप में जोर दिया, जिसका अर्थ है सरकारी हस्तक्षेप *से मुक्ति*। इसने न्यूनतम "रात्रि-चौकीदार राज्य" की वकालत की।
- कारण (R) भी सत्य है; आधुनिक उदारवाद (या सकारात्मक उदारवाद), जो 19वीं सदी के अंत में उभरना शुरू हुआ, ने माना कि औद्योगिक पूंजीवाद ने नए अन्याय पैदा किए। यह सामाजिक समस्याओं को दूर करने, कल्याण प्रदान करने और अवसर की समानता सुनिश्चित करने के लिए राज्य के हस्तक्षेप का समर्थन करता है, जिससे "सकारात्मक स्वतंत्रता" को बढ़ावा मिलता है - कार्य करने और क्षमता का एहसास करने की क्षमता।
- जबकि दोनों कथन सत्य हैं और उदारवाद के विभिन्न चरणों या पहलुओं का वर्णन करते हैं, (आर) उदारवादी विचार में बाद के विकास और बदलाव का वर्णन करता है, बजाय इसके कि वह सीधे तौर पर यह बताए *कि* शास्त्रीय उदारवाद ने नकारात्मक स्वतंत्रता पर जोर क्यों दिया।
- (आर) में वर्णित बदलाव शास्त्रीय उदारवादी ढांचे की कथित सीमाओं और परिणामों की प्रतिक्रिया थी, न कि शास्त्रीय उदारवाद के मूल सिद्धांतों की व्याख्या।
- दोनों वक्तव्य दस्तावेज़ में उल्लिखित शास्त्रीय और आधुनिक उदारवाद के बीच के अंतर को सटीक रूप से दर्शाते हैं।
- दस्तावेज़ में इन विचारों के बीच स्पष्ट अंतर दर्शाया गया है, तथा शास्त्रीय उदारवाद के लिए नकारात्मक स्वतंत्रता और आधुनिक उदारवाद के लिए सकारात्मक स्वतंत्रता पर प्रकाश डाला गया है।

प्रश्न 7. बहुसंस्कृतिवाद में प्रमुख व्यक्तियों और उनकी प्राथमिक चिंताओं या प्रमुख अवधारणाओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित करें:

सूची I (मुख्य चित्र)	**सूची II (प्राथमिक चिंता/मुख्य अवधारणा)**
(ए) चार्ल्स टेलर	(I) उदार न्याय को अल्पसंख्यक अधिकारों के साथ सामंजस्य स्थापित करना, "पसंद का संदर्भ"
(बी) विल किमलिक्का	(II) वास्तविक अंतरसांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देना, उदार सार्वभौमिकता की आलोचना करना
(सी) भीखू पारेख	(III) मान्यता की राजनीति, सांस्कृतिक अस्तित्व और गरिमा सुनिश्चित करना
(डी) आइरिस मैरियन यंग	(IV) "अंतर-अंधा" सार्वभौमिक नागरिकता, "सांस्कृतिक साम्राज्यवाद" की आलोचना

कोड:
(1) (ए)-(आई), (बी)-(द्वितीय), (सी)-(III), (डी)-(IV)
(2) (ए)-(द्वितीय), (बी)-(III), (सी)-(IV), (डी)-(आई)
(3) (ए)-(III), (बी)-(आई), (सी)-(II), (डी)-(IV)
(4) (ए)-(IV), (बी)-(आई), (सी)-(III), (डी)-(II)

उत्तर : (3)
स्पष्टीकरण:

- चार्ल्स टेलर की प्राथमिक चिंता "मान्यता की राजनीति" है, उनका तर्क है कि किसी समूह के सांस्कृतिक मूल्य की गैर-मान्यता या गलत मान्यता नुकसान पहुंचाती है और संस्कृतियां आवश्यक अर्थ प्रदान करती हैं।
- विल किमलिका को उदार न्याय को अल्पसंख्यक अधिकारों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए जाना जाता है, उनका तर्क है कि संस्कृति "पसंद का संदर्भ" प्रदान करती है जो व्यक्तिगत स्वायत्तता और समूह-विभेदित अधिकारों के प्रकारों के बीच अंतर करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- भीखू पारेख वास्तविक अंतरसांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करते हैं और विशुद्ध उदार ढांचे के सार्वभौमिक अनुप्रयोग की आलोचना करते हैं, तथा तर्क देते हैं कि मनुष्य "सांस्कृतिक रूप से निर्मित" हैं।
- आइरिस मैरियन यंग, हालांकि विभेदित नागरिकता के संदर्भ में उल्लेखित हैं, लेकिन वे विशुद्ध रूप से "अंतर-अंधा" सार्वभौमिक नागरिकता की आलोचना करती हैं, तथा तर्क देती हैं कि इससे अल्पसंख्यकों को हाशिए पर धकेला जा सकता है, जिसे उन्होंने "सांस्कृतिक साम्राज्यवाद" की संज्ञा दी है।
- ये जोड़ियां सिद्धांतकारों को उनके केंद्रीय विचारों के साथ सही ढंग से जोड़ती हैं, जैसा कि दस्तावेज़ में प्रस्तुत किया गया है।

- तालिका "प्रमुख बहुसांस्कृतिक सिद्धांतकारों की तुलना" और पाठ में अन्य विवरण इन मिलानों का समर्थन करते हैं।

8. अभिकथन (A): बहुसंस्कृतिवाद की एक महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि यह सांस्कृतिक विशिष्टता पर जोर देकर राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सामंजस्य को खतरा पहुंचा सकता है।
कारण (R): ब्रायन बैरी जैसे आलोचकों का तर्क है कि बहुसांस्कृतिक नीतियां, समूहों के साथ अलग-अलग व्यवहार करके, कानून के तहत समान उपचार के उदारवादी सिद्धांत का उल्लंघन करती हैं और विभाजन को बढ़ावा दे सकती हैं।
कोड:
(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(3) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(4) (A) गलत है लेकिन (R) सही है.

उत्तर : (2)
स्पष्टीकरण:

- अभिकथन (A) सत्य है। बहुसंस्कृतिवाद की प्रमुख राष्ट्रवादी आलोचनाओं में से एक यह है कि सांस्कृतिक विशिष्टता पर इसका जोर सामाजिक विभाजन, "समानांतर समाजों" के गठन और साझा राष्ट्रीय पहचान या नागरिक एकजुटता को कमजोर कर सकता है।
- कारण (R) भी सही है। ब्रायन बैरी, एक प्रमुख उदार आलोचक, *संस्कृति और समानता* (2001) में तर्क देते हैं कि बहुसंस्कृतिवाद समूहों के साथ अलग-अलग व्यवहार करके उदार समानता को कमजोर करता है, जो उनके अनुसार कानून के तहत समान उपचार के सिद्धांत का उल्लंघन करता है और विभाजन को मजबूत कर सकता है।
- जबकि दोनों कथन सत्य हैं और विभिन्न दृष्टिकोणों (क्रमशः राष्ट्रवादी और उदारवादी) से बहुसंस्कृतिवाद की वैध आलोचनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, (आर) समान उपचार और व्यक्तिगत अधिकारों से संबंधित उदारवादी आलोचना पर ध्यान केंद्रित करता है, जो कि (ए) में उल्लिखित सामाजिक सामंजस्य के बारे में राष्ट्रवादी चिंता से अलग है, हालांकि उससे संबंधित है।
- (आर) *एक* उदारवादी आलोचना की व्याख्या करता है, लेकिन सीधे तौर पर यह नहीं बताता कि राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से (ए) में बताए अनुसार बहुसंस्कृतिवाद को राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा *क्यों* माना जाता है। राष्ट्रवादी चिंता साझा पहचान और मूल्यों के बारे में अधिक है।
- दस्तावेज़ में विभिन्न आलोचनाओं को रेखांकित किया गया है, जिनमें सामाजिक विखंडन का खतरा और ब्रायन बैरी द्वारा की गई उदारवादी आलोचना, अलग-अलग बिंदुओं के रूप में शामिल हैं।
- इस प्रकार, (R) (A) के लिए प्रत्यक्ष या प्राथमिक स्पष्टीकरण नहीं है, भले ही दोनों वैध आलोचनाएँ हैं।

भारतीय संविधान के निम्नलिखित अनुच्छेदों में से कौन सा पाकिस्तान से भारत आये व्यक्तियों की नागरिकता के अधिकारों से संबंधित है?
(1) अनुच्छेद 5
(2) अनुच्छेद 6
(3) अनुच्छेद 7
(4) अनुच्छेद 8

उत्तर : (2)
स्पष्टीकरण:

- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 5, संविधान के प्रारंभ (1950) के समय भारत में निवास करने वाले व्यक्तियों के लिए नागरिकता को परिभाषित करता है।
- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 6 विशेष रूप से पाकिस्तान से भारत आये व्यक्तियों के नागरिकता के अधिकारों से संबंधित है।
- अनुच्छेद 7 उन व्यक्तियों के नागरिकता अधिकारों को कवर करता है जो भारत से पाकिस्तान चले गए और फिर पुनर्वास परमिट के तहत भारत लौट आए।
- अनुच्छेद 8 भारत के बाहर रहने वाले भारतीय मूल के व्यक्तियों को नागरिकता का अधिकार प्रदान करता है।
- प्रश्न में विशेष रूप से पाकिस्तान से भारत में प्रवासन के बारे में पूछा गया है, जिसका समाधान अनुच्छेद 6 में किया गया है।
- उपलब्ध कराए गए दस्तावेज़ में "नागरिकता पर महत्वपूर्ण संवैधानिक अनुच्छेदों" के अंतर्गत इन अनुच्छेदों और उनके उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से सूचीबद्ध किया गया है।

प्रश्न 10. बहुसंस्कृतिवाद के नीतिगत उदाहरणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
(ए) कनाडा की "द्विभाषी ढांचे के भीतर बहुसंस्कृतिवाद" की आधिकारिक नीति 1971 में अपनाई गई थी।
(बी) ऑस्ट्रेलिया ने 1983 में औपचारिक रूप से अपनी "श्वेत ऑस्ट्रेलिया नीति" समाप्त कर दी।
(सी) कनाडा में एक नीतिगत उदाहरण में विरासत भाषा कार्यक्रमों के लिए वित्त पोषण शामिल है।
(डी) ऑस्ट्रेलिया की बहुसांस्कृतिक नीतियाँ सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक न्याय और उत्पादक विविधता पर केंद्रित हैं।
(ई) ऑस्ट्रेलिया में विशेष प्रसारण सेवा (एसबीएस) केवल अंग्रेजी भाषा का कार्यक्रम प्रदान करती है।
वह सही विकल्प चुनें जिसमें सभी सही कथन शामिल हों:
(1) केवल (ए), (सी), और (डी)
(2) केवल (ए), (बी), (सी), और (डी)
(3) केवल (सी), (डी), और (ई)
(4) केवल (A), (D), और (E)

उत्तर : (1)

स्पष्टीकरण:

- कथन (A) सही है। कनाडा ने 1971 में "द्विभाषी ढांचे के भीतर बहुसंस्कृतिवाद" की आधिकारिक नीति अपनाई।
- कथन (B) गलत है। ऑस्ट्रेलिया ने औपचारिक रूप से अपनी "श्वेत ऑस्ट्रेलिया नीति" 1983 में नहीं बल्कि 1973 में समाप्त की थी।
- कथन (C) सही है। कनाडा की बहुसांस्कृतिक नीति का एक उदाहरण विरासत भाषा कार्यक्रमों के लिए वित्त पोषण है, जिसका उद्देश्य विविधता को पहचानना और समान भागीदारी को बढ़ावा देना है।
- कथन (D) सही है। ऑस्ट्रेलियाई बहुसांस्कृतिक नीतियाँ सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक न्याय (समानता) और उत्पादक विविधता सहित प्रमुख सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
- कथन (E) गलत है। ऑस्ट्रेलिया में विशेष प्रसारण सेवा (SBS) बहुसांस्कृतिक नीति का एक उदाहरण है, जो केवल अंग्रेज़ी प्रोग्रामिंग ही नहीं, बल्कि बहुभाषी टीवी और रेडियो भी प्रदान करती है।
- इसलिए, सही कथन (A), (C) और (D) हैं।